facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

# भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 16 मार्च 2026 ● वर्ष 7 ● अंक 35 ● मूल्यः 5 रुपए

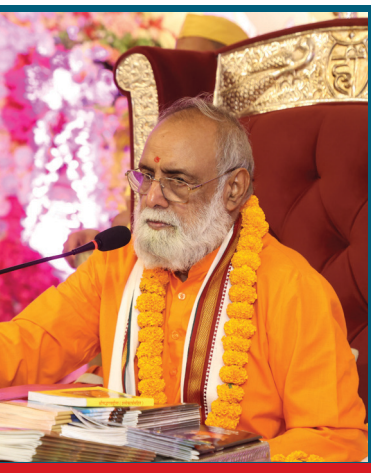

क्यों विशेष है मां का पाठ

## सद्गुरु वाणी

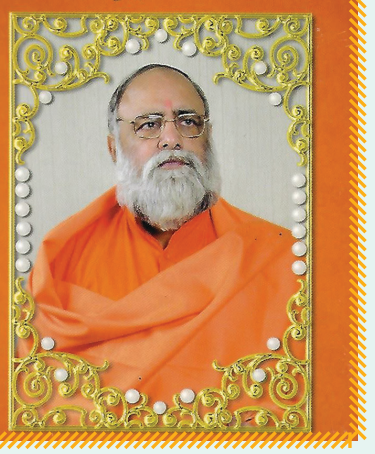

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

●

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

●

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

## कृपा वचन

ईश्वर सबको रास्ते देता है, फर्क बस इतना है- कोई विश्वास से चलता है, कोई सवालों में रुक जाता है।

●

सत्य की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उसे याद नहीं रखना पड़ता।

●

जब मन शांत होता है, तब ईश्वर शब्दों में नहीं, अनुभूति में बोलता है।

●

जीवन का एक ही नियम है,जो भाग्य में है वो भाग कर आएगा और जो भाग्य में नहीं है वो आकर भी भाग जाएगा

# होर्मुज की सांसें थमीं, दुनिया की धड़कन तेज

## अमेरिका-इज़राइल-ईरान जंग के 17वें दिन का सच

@ भारतश्री ब्यूरो

मध्य-पूर्व के आसमान में इन दिनों बारूद की गंध तैर रही है। समुद्र में जहाजों की आवाजाही जारी है, लेकिन हर जहाज के साथ दुनिया की अर्थव्यवस्था की धड़कन भी चल रही है। अमेरिका, इज़राइल और ईरान के बीच चल रहे तनाव का आज 17वां दिन है। यह सिर्फ एक युद्ध नहीं है। यह ऊर्जा, राजनीति, कूटनीति और वैश्विक संतुलन की जटिल कहानी बन चुका है।दुनिया के कई हिस्सों में लोग सुबह उठकर सबसे पहले मोबाइल पर यही खबर देख रहे हैं कि आज रात किसने किस पर हमला किया। तेल के दाम कितने बढ़े। और क्या होर्मुज स्ट्रेट अब भी खुला है या नहीं।क्योंकि अगर यह जलमार्ग बंद हुआ, तो उसका असर केवल मध्य-पूर्व तक सीमित नहीं रहेगा। उसका असर दिल्ली की रसोई से लेकर न्यूयॉर्क के पेट्रोल पंप तक महसूस होगा।

### ट्रम्प की चेतावनी और NATO पर दबाव

युद्ध के बीच रविवार को अमेरिकी राष्ट्रपति Donald Trump ने एक ऐसा बयान दिया जिसने पूरी दुनिया का ध्यान खींच लिया।उन्होंने NATO देशों को चेतावनी देते हुए कहा कि अगर सहयोगी देश होर्मुज स्ट्रेट को खुला रखने में अमेरिका की मदद नहीं करते हैं तो NATO का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। ट्रम्प ने कहा "हमारे पास NATO नाम की एक व्यवस्था है। हम उनके साथ बहुत अच्छे रहे हैं।

यूक्रेन के मामले में हमें उनकी मदद करने की जरूरत नहीं थी, फिर भी हमने उनका साथ दिया। अब देखना है कि क्या वे हमारी मदद करते हैं।"यह बयान केवल एक राजनीतिक टिप्पणी नहीं था। इसे एक साफ संदेश के तौर पर देखा जा रहा है कि अमेरिका चाहता है कि उसके सहयोगी देश इस संकट में खुलकर उसके साथ खड़े हों।ट्रम्प ने चीन को लेकर भी सख्त संकेत दिए। उन्होंने कहा कि अगर चीन होर्मुज स्ट्रेट को खुला रखने में मदद नहीं करता है तो वह इस महीने के अंत में चीनी राष्ट्रपति Xi Jinping के साथ होने वाले अपने शिखर सम्मेलन को टाल सकते हैं।

### दुबई में फिर हमला

युद्ध के बीच सोमवार सुबह एक और खबर ने लोगों को चौंका दिया।दुबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास एक फ्यूल टैंक को निशाना बनाया गया। हालांकि इस हमले में किसी के हताहत होने की खबर सामने नहीं आई है।लेकिन इस घटना ने यह संकेत जरूर दे दिया कि संघर्ष अब केवल सीमित क्षेत्रों तक नहीं रह गया है। इसके प्रभाव पूरे क्षेत्र में महसूस किए जा रहे हैं।दुबई जैसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन केंद्र में हमला होना अपने-आप में एक बड़ा संकेत माना जा रहा है।

### दुनिया का सबसे अहम समुद्री रास्ता

होर्मुज स्ट्रेट दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग माना जाता है। फारस की खाड़ी और अरब सागर को जोड़ने वाला यह संकरा रास्ता वैश्विक ऊर्जा व्यापार की धुरी है।दुनिया का करीब 20 प्रतिशत तेल इसी रास्ते से होकर गुजरता है।हर दिन हजारों टैंकर इस जलमार्ग से गुजरते हैं। इनमें से कई जहाजों का तेल एशिया, यूरोप और अमेरिका तक पहुंचता है।अगर यह रास्ता बंद हो जाता है तो तेल की आपूर्ति अचानक रुक सकती है। इससे वैश्विक बाजार में भारी उथल-पुथल मच सकती है।इसी वजह से अमेरिका ने अपने सहयोगी देशों से इस रास्ते की सुरक्षा के लिए युद्धपोत भेजने की अपील की थी।लेकिन हर देश इस जोखिम में उतरने के लिए तैयार नहीं है।

### ईरान का मिसाइल हमला

इस बीच ईरान की इस्लामिक रेवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स यानी IRGC ने दावा किया कि उसने इज़राइल के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया है।इस हमले में 'सेजिल बैलिस्टिक मिसाइल' का इस्तेमाल किया गया। यह सॉलिड फ्यूल से चलने वाली लंबी दूरी की मिसाइल है, जिसकी मारक क्षमता 2000 से 2500 किलोमीटर तक बताई जाती है। यह क्षमता दिखाती है कि यह संघर्ष केवल दो देशों के बीच की लड़ाई नहीं है। इसमें पूरी दुनिया की सुरक्षा और संतुलन जुड़ा हुआ है।

### ऑस्ट्रेलिया ने साफ किया अपना रुख

अमेरिका के करीबी सहयोगियों में गिने जाने वाले ऑस्ट्रेलिया ने इस मुद्दे पर एक अलग रुख अपनाया है।ऑस्ट्रेलिया की परिवहन मंत्री कैथरीन किंग ने साफ कहा कि उनका देश होर्मुज स्ट्रेट में अपने युद्धपोत नहीं भेजेगा।उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा "हमें पता है कि यह रास्ता कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन हमें यहां जहाज भेजने के लिए नहीं कहा गया है और हम ऐसा करने में योगदान नहीं दे रहे हैं।"

### फेक न्यूज और डिजिटल युद्ध

युद्ध अब केवल मिसाइलों और टैंकों तक सीमित नहीं रह गया है। सोशल मीडिया भी इसका बड़ा मैदान बन चुका है। इसी बीच संयुक्त अरब अमीरात ने 35 लोगों को गिरफ्तार करने का आदेश दिया है। इनमें 19 भारतीय नागरिक भी शामिल हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर फर्जी वीडियो और गलत जानकारी फैलाने की कोशिश की।यूएई के अटॉर्नी जनरल डॉ. हमद सैफ अल शम्स के अनुसार यह कार्रवाई डिजिटल प्लेटफॉर्म की निगरानी के बाद की गई।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
( 10AM TO 6PM, MON-SAT )

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

# मार्च में मई जैसी गर्मी... फिर अचानक तूफानों का हमला

## दिल्ली और उत्तर भारत में मौसम का बड़ा उलटफेर, 50 साल का रिकॉर्ड टूटा, अब बारिश और आंधी का अलर्ट

दिल्ली और उत्तर भारत के कई इलाकों में इस मार्च महीने में मौसम ने अचानक मई जैसा रूप ले लिया है। मौसम विभाग के आंकड़ों के मुताबिक दिल्ली में 7 मार्च को दिन का तापमान 35.7 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया जो पिछले 50 सालों में मार्च के पहले हफ्ते का सबसे ज्यादा तापमान है। कई जगहों पर 37 डिग्री तक पारा चढ़ गया और यह सामान्य से 5 से 7 डिग्री ज्यादा था। लोग सुबह से शाम तक पसीने में भीग रहे थे और कई को लगा कि गर्मी का मौसम पहले ही आ गया। इसकी वजह क्या है? फरवरी महीना पिछले 100 सालों में तीसरा सबसे सूखा रहा। उस समय ज्यादा बारिश या बर्फबारी नहीं हुई तो जमीन जल्दी गर्म हो गई। पश्चिमी विक्षोभ भी नहीं आए जिससे साफ आसमान और सूखी हवाएं बनी रहीं। मौसम विभाग ने कहा कि मार्च से मई तक ज्यादातर जगहों पर तापमान सामान्य से ज्यादा रहेगा और गर्मी की लहरें भी ज्यादा आएंगी। दिल्ली में 36 से 39 डिग्री तक तापमान जाने की आशंका थी। उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब में भी यही हाल था। लोग घरों में रहने को मजबूर हो गए थे और किसानों की फसलें भी प्रभावित होने लगी थीं। लेकिन ठीक इसी बीच मौसम ने करवट ली और अब तूफान की तैयारी हो रही है। यह बदलाव दिखाता है कि मौसम कितना अनिश्चित हो गया है। पहले ठंडी हवा और बारिश की उम्मीद रहती थी लेकिन अब गर्मी जल्दी आ रही है। विशेषज्ञ कहते हैं कि सूखी सर्दियों ने जमीन को जल्दी गर्म कर दिया और इससे वातावरण में असंतुलन पैदा हो गया। दिल्ली जैसे शहरों में जहां लाखों लोग रहते हैं यह गर्मी रोजमर्रा की जिंदगी को मुश्किल बना रही थी। लेकिन अब राहत की खबर आ रही है। कुल मिलाकर यह मार्च उत्तर भारत के लिए याद रखने वाला रहा क्योंकि इतनी जल्दी इतनी गर्मी पहले कम ही देखी गई।

### अचानक तूफानों का हमला

जिस समय लोग मई जैसी गर्मी से परेशान थे ठीक उसी वक्त मौसम विभाग ने उत्तर भारत में तूफान और बारिश का अलर्ट जारी कर दिया। 13 और 15 मार्च के आसपास पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश में गरज-चमक के साथ बारिश, ओले और तेज हवाएं आने की संभावना है। हवाओं की रफ्तार 30 से 50 किलोमीटर प्रति घंटा तक हो सकती है जिससे धूल भरी आंधी भी चल सकती है। हिमालयी इलाकों में बर्फबारी भी होगी। मौसम विभाग के मुताबिक तापमान 3 से 7 डिग्री तक गिर सकता है और कई जगहों पर यह 24 से 28 डिग्री के आसपास पहुंच जाएगा। दिल्ली में 15 मार्च को सुबह से ही बादल छाए और हल्की बारिश शुरू हो गई। इससे पहले की गर्मी कुछ हद तक कम हुई और लोगों को राहत मिली। लेकिन इस राहत के साथ कुछ खतरे भी हैं। तेज हवाएं बिजली के तारों और ढीली छतों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। ओले गिरने से फसलें भी प्रभावित हो सकती हैं। मौसम वैज्ञानिकों ने बताया कि पूर्वी भारत से नमी वाली हवा आ रही है जो गर्म मैदानी इलाकों से टकरा रही है। इससे वातावरण अस्थिर हो गया और तूफान बन रहे हैं।

### पश्चिमी विक्षोभ की भूमिका

पश्चिमी विक्षोभ असल में भूमध्य सागर के पास से शुरू होने वाले मौसम के सिस्टम हैं जो पूर्व की ओर बढ़ते हैं और उत्तर भारत में बारिश या बर्फबारी लाते हैं। इस बार जब दिल्ली और आसपास के इलाकों में गर्मी बहुत बढ़ गई तो इन विक्षोभों का असर अलग हो गया। गर्म जमीन पर कम दबाव का क्षेत्र बन गया जो वैक्यूम की तरह काम कर रहा था। जब इन विक्षोभों की ठंडी और नमी वाली हवाएं आईं तो दोनों के टकराव से तेज तूफान बने। मौसम विभाग ने कहा कि पूर्वी भारत से भी हवा की दिशा बदल रही है जो नमी ला रही है। इससे दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में गरज-चमक, बिजली और ओले गिरने की स्थिति बन गई। आमतौर पर मार्च में ये विक्षोभ हल्की बारिश लाते हैं लेकिन इस बार गर्मी के कारण वे ज्यादा सक्रिय हो गए। हवाओं की रफ्तार बढ़ गई और बारिश के साथ आंधी भी आई। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर विक्षोभ समय पर आते तो शायद गर्मी इतनी नहीं बढ़ती। लेकिन फरवरी में इनकी कमी ने गर्मी को बढ़ावा दिया। अब इनका आना राहत दे रहा है लेकिन तूफानों का रूप भी ले रहा है। उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में यह मिश्रण खतरनाक हो सकता है क्योंकि गर्म हवा और ठंडी नमी के मिलने से वातावरण अस्थिर हो जाता है। कई वैज्ञानिकों ने इसे मौसम का सामान्य चक्र बताया लेकिन इस बार की तीव्रता अलग है। लोग अब समझ रहे हैं कि इन विक्षोभों का सही समय और ताकत कितनी महत्वपूर्ण है। अगर ये ठीक से आएं तो फसलों को पानी मिलता है लेकिन ज्यादा ताकत से नुकसान भी हो सकता है।

### जलवायु परिवर्तन का असर

जलवायु परिवर्तन अब उत्तर भारत के मौसम को बदल रहा है। ग्लोबल वार्मिंग की वजह से अरब सागर गर्म हो रहा है जिससे पश्चिमी विक्षोभों में ज्यादा नमी आ रही है। इससे तूफान ज्यादा तीव्र हो गए हैं। मौसम विभाग ने मार्च से मई 2026 के लिए ऊपर सामान्य गर्मी और ज्यादा गर्मी की लहरों की चेतावनी दी है। पहले वसंत का मौसम लंबा रहता था लेकिन अब गर्मी जल्दी आ रही है और ठंडी बारिश अचानक हो रही है। वैज्ञानिक कहते हैं कि जेट स्ट्रीम की दिशा बदलने से विक्षोभों का पैटर्न भी प्रभावित हो रहा है। फरवरी का सूखापन और मार्च की गर्मी इसका नतीजा है। अगर ऐसे बदलाव जारी रहे तो वसंत का मौसम छोटा हो जाएगा और गर्मी-तूफान का चक्र आम हो जाएगा। उत्तर भारत में किसानों के लिए यह चुनौती है क्योंकि गेहूं की फसल पकने के समय गर्मी या ओले दोनों नुकसान पहुंचाते हैं। शहरों में स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है क्योंकि एक दिन गर्मी और दूसरे दिन नमी वाली ठंडक मुश्किल पैदा करती है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर उत्सर्जन कम नहीं हुआ तो ऐसे मौसम व्हिपलैश और बढ़ेंगे।

### लोगों और किसानों के लिए चुनौतियां

इस मौसम व्हिपलैश से दिल्ली और उत्तर भारत के आम लोगों और किसानों दोनों पर असर पड़ रहा है। गर्मी की वजह से पहले स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ीं जैसे थकान और पानी की कमी। अब तूफानों से बिजली कटौती और सड़क दुर्घटनाओं का खतरा है। तेज हवाएं पुरानी इमारतों या कच्ची छतों को उड़ा सकती हैं इसलिए लोगों को घर के अंदर रहने की सलाह दी गई है। किसानों के लिए गेहूं की फसल सबसे ज्यादा जोखिम में है। गर्मी से दाने छोटे हो सकते हैं और ओलों या तेज हवा से फसलें गिर सकती हैं। कई किसान अब सिंचाई या दवाइयां लगाने से पहले मौसम देख रहे हैं। सरकार और मौसम विभाग ने सतर्कता के मैसेज दिए हैं कि बच्चों और बुजुर्गों का खास ध्यान रखें। शहरों में ट्रैफिक पुलिस ने चेतावनी जारी की है कि बारिश के समय सड़कें फिसल सकती हैं। कुल मिलाकर यह स्थिति दोनों तरफ के नुकसान और फायदे दिखा रही है। गर्मी से राहत मिल रही है लेकिन नई समस्याएं आ गई हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि लंबे समय में ऐसे बदलावों के लिए तैयार रहना होगा।

## दिल्ली के उत्तम नगर में फिर चला बुलडोजर

दिल्ली के उत्तम नगर में एक बार फिर से बुलडोजर चला है। इस दौरान भारी संख्या में पुलिस फोर्स की तैनाती रही। लगभग आधे किलोमीटर के एरिया में बुलडोजर गरज रहा था। अधिकारियों के सामने किसी के विरोध करने की हिम्मत नहीं हुई। इस दौरान कई दुकानों में भी तोड़फोड़ की गई।

## बेसहारा लोगों की सेवा कर रहा अपना घर आश्रम

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रविवार को बूढ़पुर स्थित 'अपना घर आश्रम' के 12वें वार्षिकोत्सव और संस्था के रजत जयंती समारोह में सम्मिलित हुईं. पिछले 16 वर्षों से यह संस्थान बेसहारा, निराश्रित और अस्वस्थ लोगों की निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहा है. वर्तमान में इसके 70 से अधिक केंद्र भारत में संचालित हैं और विदेशों में भी इसकी सेवाएं निरंतर विस्तारित हो रही हैं।

## नशा देकर कराए जा रहे जुर्म पर रोक की मांग

दिल्ली में बच्चों को नशा देकर उनसे अपराध करवाने के मामलों पर लगाम लगाने की मांग को लेकर आप नेता सौरभ भारद्वाज ने मीडिया को संबोधित किया। इस दौरान उनके साथ विशेष रवि और कुलदीप भी मौजूद रहे। उन्होंने ऐसे गिरोहों पर सख्त कार्रवाई की मांग उठाई।

## 22 मार्च को दिल्ली में नेशनल लोक अदालत होगी आयोजित

राजधानी दिल्ली में लंबित ट्रैफिक चालानों के निपटारे के लिए एक बड़ा अवसर सामने आया है. दिल्ली राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से दिल्ली ट्रैफिक पुलिस द्वारा 11 मार्च 2016, रविवार को 'नेशनल लोक अदालत' आयोजित की जा रही है. इस विशेष पहल के तहत दिल्ली के विभिन्न न्यायालय परिसरों में सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक लोगों को अपने लंबित चालान और नोटिसों का निपटारा कराने का अवसर मिलेगा। इस पहल का उद्देश्य लोगों को एक ही दिन में अपने लंबित चालान या नोटिस का समाधान कराने की सुविधा देना है. जिन वाहन चालकों के ट्रैफिक चालान या नोटिस लंबित हैं, वे इस अवसर का लाभ उठाकर अपने मामलों का निपटारा कर सकते हैं।

# मुंबई में अखिलेश यादव का संबोधन

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव रविवार को मुंबई दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने एक कार्यक्रम में जनता को संबोधित करते हुए अपनी सरकार के कामों और योजनाओं को याद किया। अपने भाषण में उन्होंने कुंभ मेले की व्यवस्था से लेकर मेट्रो, एक्सप्रेसवे, पर्यावरण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक कई फैसलों का जिक्र किया। साथ ही उन्होंने मौजूदा सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि जिन कामों को आज उपलब्धि बताया जा रहा है, उनमें से कई पहल उनकी सरकार के समय शुरू हो चुकी थीं।

## कुंभ मेले की व्यवस्था का जिक्र

अखिलेश यादव ने कहा कि उनकी सरकार ने कुंभ मेले के दौरान सुरक्षा और व्यवस्था को लेकर कई नए प्रयोग किए थे। उन्होंने बताया कि उस समय गैस सिलेंडरों से होने वाली संभावित दुर्घटनाओं को रोकने के लिए एक खास व्यवस्था की गई थी। सिलेंडरों को रेत के नीचे रखने का प्रावधान किया गया था ताकि खाना बन सके, लेकिन आग लगने या विस्फोट की संभावना कम हो जाए। उन्होंने कहा कि इस तरह के छोटे-छोटे बदलावों से बड़े आयोजनों को सुरक्षित बनाना संभव हुआ था।

## लखनऊ मेट्रो और इंफ्रास्ट्रक्चर पर बात

अपने भाषण में उन्होंने उत्तर प्रदेश में मेट्रो परियोजना का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि मेट्रो उनके चुनावी घोषणा पत्र का हिस्सा नहीं थी, लेकिन शहरों की जरूरत

## कुंभ से मेट्रो तक गिनाईं अपनी सरकार की उपलब्धियां

को देखते हुए इसे शुरू किया गया। उन्होंने बताया कि देश के प्रसिद्ध इंजीनियर ई. श्रीधरन को सलाहकार बनाकर इस परियोजना को आगे बढ़ाया गया और कम समय में मेट्रो का निर्माण किया गया।अखिलेश यादव के अनुसार उनकी सरकार ने सिर्फ मेट्रो ही नहीं बल्कि कई बड़े बुनियादी ढांचे के काम भी शुरू किए। उन्होंने कहा कि देश का सबसे बड़ा सिंगल एलिवेटेड रोड भी उनके कार्यकाल में बना। इसके अलावा लखनऊ में गोमती नदी के किनारे रिवर फ्रंट विकसित किया गया, जिससे शहर को एक नया स्वरूप मिला।

## पर्यावरण और ग्रीन बेल्ट की पहल

अखिलेश यादव ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अपनी सरकार की पहल का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उस समय ग्रीन बेल्ट बनाने के लिए एक अलग तरीका अपनाया गया था। इसमें यह तय किया गया कि पहला पेड़ कोई मंत्री या नेता नहीं लगाएगा। जब पूरा ग्रीन बेल्ट तैयार हो जाएगा, तब आखिरी पेड़ लगाने के लिए किसी मंत्री या नेता को बुलाया जाएगा।उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था से विभागों पर काम जल्दी पूरा करने का दबाव बना और बड़ी संख्या में पेड़ लगाए गए। उनका दावा था कि उनकी सरकार के दौरान उत्तर प्रदेश में वन क्षेत्र बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर पौधारोपण किया गया।

## लैपटॉप योजना और शिक्षा

समाजवादी पार्टी को अक्सर गांव और किसानों की पार्टी कहा जाता रहा है। इस बात का जिक्र करते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि जब उनकी सरकार ने छात्रों को लैपटॉप देने का फैसला लिया था, तब इसकी काफी चर्चा हुई थी।

उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत बड़ी संख्या में छात्रों को लैपटॉप दिए गए और आज तक इस वितरण प्रक्रिया पर कोई बड़ा सवाल नहीं उठा।उन्होंने हल्के अंदाज में यह भी बताया कि जब लैपटॉप चालू होता था तो सबसे पहले उनकी और उनके पिता Mulayam Singh Yadav की तस्वीर दिखाई देती थी।

## संस्कृति और कला को बढ़ावा

अखिलेश यादव ने कहा कि उनकी सरकार ने सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए भी कई कदम उठाए थे। उस समय ऐसी नीतियां बनाई गईं जिनसे उत्तर प्रदेश में फिल्मों और टीवी सीरियल की शूटिंग बढ़ी। इससे स्थानीय कलाकारों और तकनीशियनों को काम मिला। उन्होंने यह भी कहा कि लोक कलाकारों और साहित्यकारों को सम्मान देने के लिए यश भारती पुरस्कार दिया गया और सम्मानित कलाकारों को हर महीने आर्थिक सहायता भी दी गई।

# 35 दिन का उपवास, 170 दिन की जेल

# रिहाई के बाद क्या करेंगे सोनम वांगचुक ?

सोनम वांगचुक का जन्म 1 सितंबर 1966 को लद्दाख के उलेतोक्पो गांव में हुआ था। बचपन में गांव में स्कूल नहीं था इसलिए उनकी मां ने उन्हें घर पर ही पढ़ाया। नौ साल की उम्र में वे श्रीनगर गए जहां स्कूल की पढ़ाई उर्दू और अंग्रेजी में थी जो उन्हें अजनबी लगी। बाद में वे दिल्ली पहुंचे और वहां से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की। 1988 में उन्होंने अपने भाई और दोस्तों के साथ एसईसीएमओएल यानी स्टूडेंट्स एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख शुरू किया। यह स्कूल लद्दाख के बच्चों के लिए अलग था क्योंकि यहां किताबी रट्टा नहीं बल्कि खेती बाड़ी मशीन रिपेयर और स्थानीय संस्कृति पर जोर दिया जाता था। पहले सिर्फ 5 प्रतिशत बच्चे दसवीं पास करते थे लेकिन एसईसीएमओएल के बाद यह संख्या 75 प्रतिशत तक पहुंच गई। उन्होंने आइस स्टूपा बनाए जो सर्दियों में बर्फ जमा करके गर्मियों में पानी देते हैं ताकि किसान सूखे से बच सकें। सोलर एनर्जी से चलने वाले स्कूल और घर बनाए जो बिना कोयले के गर्म रहते हैं। 2018 में उन्हें रामोन मैग्सेसे पुरस्कार मिला जो एशिया का बड़ा सम्मान है। फिल्म थ्री इडियट्स का किरदार फुनसुख वांगडू भी इन्हीं से प्रेरित था। बाद में उन्होंने हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ अल्टरनेटिव्स शुरू किया ताकि पहाड़ी इलाकों में शिक्षा बेहतर हो। शुरू में वे सिर्फ शिक्षा और पर्यावरण के काम करते थे लेकिन 2019 में जब जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाया गया और लद्दाख यूनियन टेरिटरी बना तो वे धीरे धीरे राजनीतिक मुद्दों की तरफ मुड़े क्योंकि उन्हें लगा कि लद्दाख के लोगों को अपनी जमीन नौकरियां और संस्कृति बचाने की जरूरत है।

## आंदोलन की ओर मुड़ाव

2019 के बाद सोनम वांगचुक ने देखा कि लद्दाख अब अलग यूनियन टेरिटरी है लेकिन यहां छठी अनुसूची नहीं लगी है जो आदिवासी इलाकों को विशेष सुरक्षा देती है। लद्दाख की 90 प्रतिशत से ज्यादा आबादी आदिवासी है और वे अपनी जमीन को बाहर के लोगों और माइनिंग कंपनियों से बचाना चाहते हैं। उन्होंने कई बार उपवास शुरू किए जैसे 2023 में खारदुंगला पास पर जलवायु उपवास और 2024 में 21 दिन का क्लाइमेट फास्ट। सितंबर 2025 में उन्होंने 35 दिन का उपवास शुरू किया जिसके तहत राज्य का दर्जा और छठी अनुसूची की मांग की। लेह एपेक्स बॉडी और कारगिल डेमोक्रेटिक एलायंस जैसे संगठनों के साथ मिलकर वे शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे थे। उनका कहना था कि लद्दाख की नाजुक पर्यावरण और सीमा सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए केंद्र को स्थानीय लोगों को अधिकार देने चाहिए ताकि

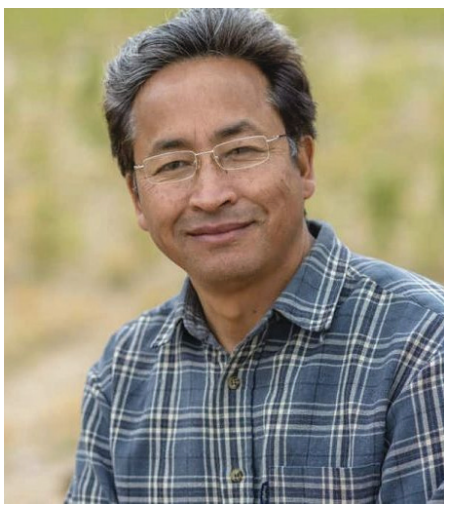

बाहर के निवेश से संस्कृति और जमीन न बिगड़े। उन्होंने चाइनीज प्रोडक्ट्स का बहिष्कार भी किया और सोलर टेंट सैनिकों को दिए। लेकिन सरकार का कहना था कि यह आंदोलन शांतिपूर्ण था पर कुछ युवाओं ने हिंसा कर दी। सोनम ने हमेशा अहिंसा पर जोर दिया और कहा कि हम सिर्फ संविधान के तहत सुरक्षा चाहते हैं।

## एनएसए हिरासत क्यों?

सितंबर 2025 में सोनम वांगचुक का उपवास जारी था तभी 24 सितंबर को लेह में प्रदर्शन हिंसक हो गए। कुछ युवाओं ने बीजेपी ऑफिस और हिल काउंसिल की इमारत पर हमला कर दिया जिसके बाद पुलिस फायरिंग हुई और चार लोग मारे गए जबकि सौ से ज्यादा घायल हुए। सरकार ने सोनम पर आरोप लगाया कि उनकी उत्तेजक भाषणों ने भीड़ को भड़काया जैसे अरब स्प्रिंग या आत्मदाह की बातें। उन्होंने इन आरोपों से इनकार किया और कहा कि वे तो शांति की अपील कर रहे थे। 26 सितंबर को लेह के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने नेशनल सिक्योरिटी एक्ट यानी एनएसए के तहत उन्हें हिरासत में लिया क्योंकि सीमा इलाके में कानून व्यवस्था बिगड़ने का खतरा था। उन्हें जोधपुर सेंट्रल जेल भेज दिया गया जहां वे 170 दिन तक रहे। उनकी संस्था एसईसीएमओएल का एफसीआरए लाइसेंस रद्द कर दिया गया और कुछ लोगों ने पाकिस्तान से लिंक का आरोप भी लगाया जो उन्होंने खारिज किया। एनएसए एक सख्त कानून है जो बिना मुकदमा चलाए हिरासत की इजाजत देता है अगर कोई व्यक्ति सुरक्षा के लिए खतरा हो। सरकार का मानना था कि सोनम की वजह से बैंध और प्रदर्शन बढ़ रहे थे जो छात्रों व्यापार और पर्यटन को नुकसान पहुंचा रहे थे।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

# कैमूर के जंगलों पर मंडराता खतर

## क्या विकास की दौड़ में खो जाएगा आदिवासियों का संसार?

सोनभद्र के घने वन, प्राचीन गुफाएँ और आदिवासी जीवन पर औद्योगिक परियोजनाओं की आहट; जमीन के सौदों और पर्यावरणीय संकट को लेकर बढ़ी चिंता

@ अभिषेक चौबे/ग्राउंड रिपोर्ट

सोनभद्र के कैमूर वन क्षेत्र की सुबह किसी कहानी जैसी लगती है। सूरज की पहली किरण जब पहाड़ियों के पीछे से निकलती है तो घने पेड़ों के बीच हल्की धुंध तैरती दिखती है। दूर कहीं से पक्षियों की आवाजें आती हैं, और जंगल के भीतर छोटे-छोटे रास्तों पर आदिवासी महिलाएँ लकड़ी और पत्ते बटोरने निकल पड़ती हैं। लेकिन इन दिनों इस शांत जंगल के भीतर एक बेचैनी भी है। लोगों की बातचीत में बार-बार एक ही सवाल सुनाई देता है—क्या यह जंगल वैसे ही रहेगा, जैसा सदियों से रहा है? या फिर आने वाले समय में यहाँ बड़े कारखाने, मशीनें और सड़कें दिखाई देंगी ?कैमूर का यह इलाका सोनभद्र जिले के उन आखिरी बड़े वन क्षेत्रों में गिना जाता है जहाँ आज भी प्रकृति अपेक्षाकृत सुरक्षित है।

### आदिवासी गाँवों की दुनिया

कैमूर वन क्षेत्र के भीतर और आसपास कई छोटे-छोटे गाँव बसे हैं-चिचलीक, पनौरा, खौडैला, महुली, रामपुर, सोमा सथारी, बैजनाथ महुली, बसुआरी और चन्नी जैसे गाँव। इन गाँवों में अधिकतर आदिवासी और वनवासी समुदाय रहते हैं।यहाँ के लोगों की जिंदगी जंगल से ही शुरू होती है और उसी पर खत्म होती है। जंगल उन्हें लकड़ी देता है, जड़ी-बूटियाँ देता है, खाने के लिए फल देता है और खेती के लिए जमीन भी।एक बुजुर्ग आदिवासी रामसेवक कहते हैं, "हमारे लिए जंगल सिर्फ पेड़ नहीं है। यही हमारा घर है, यही हमारी रोजी है।" इन जंगलों में कई प्राकृतिक जलस्रोत हैं।

### जंगल पर मंडराता खतरा

पर्यावरण के जानकारों का कहना है कि अगर इस इलाके में बड़े पैमाने पर औद्योगिक गतिविधियाँ शुरू होती हैं तो इसका असर केवल कैमूर के पहाड़ों तक सीमित नहीं रहेगा।इन जंगलों की वजह से पूरे क्षेत्र का जलचक्र संतुलित रहता है। यहाँ की मिट्टी, पेड़ और झरने आसपास के मैदानी इलाकों को भी प्रभावित करते हैं।अगर बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई होती है तो इससे पानी के स्रोत सूख सकते हैं। जंगल में रहने वाले जानवरों का प्राकृतिक आवास खत्म हो सकता है।कैमूर के जंगलों में हिरण, सियार, भालू और कई दुर्लभ पक्षियों की प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं। यह इलाका जैव विविधता के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण माना जाता है।

> सोनभद्र के पर्वत ,वन और नदियां अनेकों रहस्यों को समेटे हैं।इसमें प्रागैतिहासिक काल की मिति चित्र गुफाएं और आदि शैव संस्कृति के ऐसे स्थान है जिनका दुनिया को पता तक नहीं है।इस क्षेत्र पर शोध होना चाहिए और जैव विविधताओं का संरक्षण होना चाहिए न कि विनाश।
>
> **अरुण कुमार पाण्डेय (सह संयोजक -पर्यावरण मंच, उत्तर प्रदेश )**

> "आदिवासी समाज का जीवन जंगल, जमीन और जलस्रोतों से गहराई से जुड़ा होता है। जब बड़े औद्योगिक या ऊर्जा प्रोजेक्ट बिना संतुलित योजना के लागू होते हैं, तो इसका सबसे बड़ा असर इन्हीं समुदायों पर पड़ता है। इसलिए विकास की दिशा ऐसी होनी चाहिए जो पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय आजीविका दोनों को साथ लेकर चले।"
>
> **रवि चौबे (पर्यावरण कार्यकर्ता )**

> आदिवासी समाज के प्रति नीतिगत संवेदनशीलता लगातार कम होती दिखाई दे रही है। विकास की वर्तमान दिशा में बड़े हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट अक्सर स्थानीय पारिस्थितिकी, जलचक्र और पारंपरिक आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। इसके विपरीत, गौ-आधारित अर्थव्यवस्था और कृषि आधारित उद्योग स्थानीय संसाधनों के अनुरूप अधिक टिकाऊ मॉडल प्रस्तुत करते हैं। ऐसे मॉडल न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हैं बल्कि आदिवासी समुदायों की आजीविका और सामाजिक संरचना को भी मजबूत करते हैं।
>
> **चंद्र विकास (सस्टेनेबल मोबिलिटी और पर्यावरण मामलों के विशेषज्ञ, IIT खड़गपुर और IIM कलकत्ता के पूर्व छात्र )**

## जमीन के सौदों की खबर

हाल के महीनों में कैमूर क्षेत्र से कुछ ऐसी खबरें आने लगीं जिनसे स्थानीय लोग चिंतित हो गए। ग्रामीणों का कहना है कि इस इलाके की जमीन धीरे-धीरे निजी कंपनियों के हाथों में जा रही है।बताया जा रहा है कि करीब 1700 हेक्टेयर सघन वन क्षेत्र औद्योगिक परियोजनाओं के लिए निजी कंपनियों को दिया गया है। कई जगहों पर जमीन खरीदने की प्रक्रिया भी हुई है।ग्रामीणों का आरोप है कि यह प्रक्रिया पारदर्शी नहीं रही। उनका कहना है कि कई लोगों को रोजगार और विकास के नाम पर भरोसा दिलाया गया, लेकिन उन्हें जमीन के असली मूल्य या भविष्य के असर के बारे में पूरी जानकारी नहीं दी गई।कुछ लोगों का आरोप यह भी है कि जमीन खरीदने के दौरान कई बार ग्रामीणों को लालच दिया गया या उन्हें समझाए बिना दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कराए गए।

### आस्था से जुड़ा है जंगल

कैमूर क्षेत्र केवल प्राकृतिक संपदा से ही नहीं, बल्कि धार्मिक आस्था से भी जुड़ा हुआ है।यहाँ कई ऐसे स्थान हैं जिन्हें स्थानीय लोग पवित्र मानते हैं। गुप्ताधाम, नल राजा, वन देवी, छिपातली और धरती माता जैसे कई श्रद्धा केंद्र जंगल के भीतर मौजूद हैं। एक स्थानीय महिला कहती हैं, "हमारे देवता भी जंगल में रहते हैं। अगर जंगल खत्म हो गया तो हमारी आस्था भी खत्म हो जाएगी।"

### 17000 मेगावाट की जलविद्युत परियोजनाओं पर हाईकोर्ट सख्त

इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने सोनभद्र जिले में प्रस्तावित करीब 17000 मेगावाट की जलविद्युत परियोजनाओं को लेकर सख्त रुख अपनाया है। अदालत ने पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए केंद्र सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से जवाब तलब किया है।

> भारतीय संविधान का अनुच्छेद 48ए राज्य को पर्यावरण और वनों की रक्षा और सुधार करने का दायित्व देता है,"राज्य पर्यावरण की रक्षा और सुधार करने तथा देश के वनों और वन्य जीवन की सुरक्षा के लिए प्रयास करेगा" एवं अनुच्छेद 51ए(जी) नागरिकों को दायित्व देता है "भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह वनों, झीलों, नदियों और वन्यजीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और सुधार करे तथा जीवित प्राणियों के प्रति दया भाव रखे।"
>
> **अभिलाषा पांडेय (उच्च न्यायालय इलाहाबाद,लखनऊ खंडपीठ)**

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 16 मार्च 2026 , विक्रम संवत 2080

# क्या ईरान ने अपनी ताकत से ज्यादा बड़ा दांव खेल दिया

अमेरिका और ईरान का युद्ध लगातार चल रहा है। कौन जीतेगा कौन हारेगा यह अभी निश्चित नहीं है लेकिन एक बात निश्चित है कि ईरान ने लड़कर मूर्खता की है । यह बात जग जाहिर है की दुनिया में दो ही शक्तियां हैं एक है लोकतांत्रिक ताकत और दूसरी है तानाशाही ताकत। लोकतांत्रिक ताकत के रूप में आप अमेरिका के नेतृत्व को मान सकते हैं और तानाशाही की ताकत के रूप में चीन के नेतृत्व को मान सकते हैं। दोनों के बीच में कुछ चूहे भी जीवित रह सकते हैं जो दोनों के साथ अच्छे संबंध रखकर बीच में स्वतंत्र रह सकते हैं। इस प्रकार के लोगों में अनेक मुस्लिम देश भी हैं भारत भी है और भी अनेक देश हैं लेकिन ईरान ने अकड़ने की गलती की। उसने एक तीसरी शक्ति बनने का प्रयास किया और उस प्रयास की उसके पास शक्ति नहीं थी। आप सोचिए कि ईरान को अपने नागरिकों पर हिजाब पहनने के लिए इतनी गुंडागर्दी करने की क्या जरूरत थी क्या दुनिया आंख बंद करके इस गुंडागर्दी को स्वीकार कर ले। ईरान को क्या जरूरत थी कि वह हिज्बुल्लाह हमास हूती इस तरह के संगठन खड़े करके अन्य देश में अस्थिरता पैदा करता। क्या दुनिया अंधी है जो ईरान की इस गलती को नहीं देखेगी । मैं मानता हूं कि ईरान को यह विश्वास था कि अमेरिका लोकतांत्रिक देश है और इसलिए अमेरिका उसके साथ अन्याय नहीं करेगा गुंडागर्दी नहीं करेगा लेकिन इस बात की क्या गारंटी है कि अमेरिका में ट्रंप सरीका कोई दादा प्रधानमंत्री नहीं बन जाएगा और यदि बन गया तो क्या गारंटी है कि उस दादा से लड़कर तुम जिंदा रह पाओगे। इसलिए ईरान ने अपनी ताकत को भुलाकर अकड़ने की कोशिश की है अमेरिका से अकड़ कर वियतनाम अफगानिस्तान क्यूबा यह देश आज तक खड़े नहीं हो पाए हैं इसलिए ईरान को इन घटनाओं से सबक सिखना चाहिए था । मैं यह बात नहीं कह रहा कि अमेरिका लोकतांत्रिक कार्य कर रहा है मैं यह भी नहीं कह रहा कि ट्रंप सही कर रहे हैं लेकिन मैं इतनी बात जरूर कह रहा हूं कि ईरान ने वर्तमान परिस्थितियों में मूर्खता की है। जिस समाज में न्याय अन्याय का निपटारा शेर करते हो उस समाज में अपनी ताकत समझे बिना उछल कूद करना मूर्खता ही मानी जाएगी। ईरान को नरेंद्र मोदी से शिक्षा लेनी चाहिए थी।

**ज्ञानेंद्र आर्य**

# 8वें वेतन आयोग की कसौटी

@ **अनुराग पाठक**

देश में जब भी किसी नए वेतन आयोग की चर्चा शुरू होती है, तो लाखों सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के मन में उम्मीदों की एक नई लहर पैदा हो जाती है। आज भी कुछ ऐसा ही माहौल है। केंद्र सरकार ने औपचारिक रूप से 8वें केंद्रीय वेतन आयोग की प्रक्रिया शुरू कर दी है और इसके साथ ही देशभर के लाखों कर्मचारियों की नजरें अब आने वाले फैसलों पर टिक गई हैं।वेतन आयोग केवल सैलरी बढ़ाने का एक प्रशासनिक फैसला नहीं होता, बल्कि यह सरकार और उसके कर्मचारियों के बीच भरोसे, संतुलन और जिम्मेदारी का एक बड़ा संकेत भी होता है। इसलिए हर नया वेतन आयोग केवल आर्थिक आंकड़ों का मामला नहीं रहता, बल्कि यह सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन जाता है।

सरकार ने इस बार एक अलग और अपेक्षाकृत खुला रास्ता अपनाते हुए कर्मचारियों, पेंशनभोगियों और विभिन्न कर्मचारी संगठनों से सुझाव मांगने की प्रक्रिया शुरू की है। इसके लिए एक ऑनलाइन पोर्टल भी खोला गया है, जहां 30 अप्रैल 2026 तक सुझाव दिए जा सकते हैं। यह कदम इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि इससे सरकार को जमीनी स्तर पर कर्मचारियों की वास्तविक अपेक्षाओं और समस्याओं को समझने का अवसर मिलेगा।दरअसल, वेतन आयोग का सबसे बड़ा सवाल हमेशा यही होता है कि आखिर कर्मचारियों की सैलरी में कितनी बढ़ोतरी होगी। अभी इस सवाल का कोई निश्चित जवाब मौजूद नहीं है। लेकिन पिछले वेतन आयोगों के अनुभव के आधार पर कुछ अनुमान जरूर लगाए जा रहे हैं।

7वें वेतन आयोग के तहत केंद्र सरकार के कर्मचारियों का न्यूनतम मूल वेतन 18,000 रुपये निर्धारित किया गया था, जबकि अधिकतम मूल वेतन 2.5 लाख रुपये प्रति माह तय किया गया था। उस समय सरकार ने 2.57 का फिटमेंट फैक्टर लागू किया था, जिसके कारण कर्मचारियों के वेतन और भत्तों पर कुल प्रभाव लगभग 23 से 25 प्रतिशत के आसपास माना गया।अब 8वें वेतन आयोग को लेकर विशेषज्ञों का मानना है कि इस बार वेतन में लगभग 20 से 35 प्रतिशत तक की वृद्धि संभव हो सकती है। यह अनुमान मुख्य रूप से फिटमेंट फैक्टर के आधार पर लगाया जा रहा है, जो 2.4 से 3.0 के बीच रहने की संभावना जताई जा रही है।

हालांकि यह केवल अनुमान हैं। वास्तविक निर्णय कई आर्थिक और प्रशासनिक कारकों पर निर्भर करेगा। इनमें देश की आर्थिक स्थिति, महंगाई की दर, सरकार की राजकोषीय क्षमता और कर राजस्व में होने वाली वृद्धि जैसे पहलू शामिल हैं।वेतन आयोग के सामने सबसे बड़ी चुनौती हमेशा यही रहती है कि वह कर्मचारियों की अपेक्षाओं और सरकार की आर्थिक सीमाओं के बीच संतुलन कैसे बनाए।कर्मचारी स्वाभाविक रूप से चाहते हैं कि उनके वेतन में पर्याप्त वृद्धि हो, क्योंकि महंगाई और जीवन-यापन की लागत लगातार बढ़ रही है। दूसरी ओर सरकार को यह भी देखना होता है कि वेतन और पेंशन पर होने वाला खर्च सरकारी खजाने पर अत्यधिक बोझ न बन जाए।

यही कारण है कि इस बार भी वेतन आयोग की सिफारिशें केवल वेतन वृद्धि तक सीमित नहीं रहेंगी, बल्कि भत्तों और महंगाई भत्ते की संरचना में भी बदलाव की संभावना है। विशेषज्ञों का मानना है कि सरकार वेतन, भत्तों और डीए के बीच एक संतुलित व्यवस्था बनाने की कोशिश करेगी।दरअसल, पिछले कुछ वर्षों में महंगाई भत्ते की भूमिका काफी बढ़ी है। समय-समय पर डीए में बढ़ोतरी के कारण कर्मचारियों की कुल आय में बदलाव आता रहा है। ऐसे में यह भी संभव है कि 8वां वेतन आयोग इस पूरी संरचना को नए सिरे से देखने की कोशिश करे।

एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इस आयोग को अपनी सिफारिशें तैयार करने के लिए लगभग 18 महीने का समय दिया गया है। नवंबर 2025 में इसकी औपचारिक अधिसूचना जारी होने के बाद आयोग अब धीरे-धीरे अपनी प्रक्रिया को आगे बढ़ा रहा है।इस दौरान विभिन्न कर्मचारी संगठनों, पेंशनभोगी समूहों और विशेषज्ञों से मिलने वाले सुझाव भी आयोग के लिए महत्वपूर्ण आधार बन सकते हैं।

दरअसल, किसी भी वेतन आयोग की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कर्मचारियों की वास्तविक जरूरतों को किस हद तक समझ पाता है। केवल वेतन बढ़ाना ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि सेवा शर्तों, पेंशन व्यवस्था और भविष्य की आर्थिक सुरक्षा जैसे मुद्दों को भी ध्यान में रखना जरूरी होता है।सरकार के सामने इस समय एक और बड़ी चुनौती है। देश की अर्थव्यवस्था तेजी से बदल रही है और सरकारी खर्चों की प्राथमिकताएं भी बदल रही हैं। ऐसे में वेतन आयोग की सिफारिशों का प्रभाव केवल कर्मचारियों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसका असर देश की समग्र आर्थिक व्यवस्था पर भी पड़ेगा।

यह भी ध्यान देने की बात है कि केंद्र सरकार के वेतन आयोगों का असर अक्सर राज्यों पर भी पड़ता है। कई राज्य सरकारें बाद में अपने कर्मचारियों के लिए भी इसी तरह की वेतन संरचना अपनाती हैं। इसलिए 8वें वेतन आयोग का निर्णय देशभर में व्यापक प्रभाव डाल सकता है।अंततः यह कहा जा सकता है कि 8वां वेतन आयोग केवल वेतन वृद्धि का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सरकार की आर्थिक प्राथमिकताओं और कर्मचारियों के साथ उसके संबंधों की एक महत्वपूर्ण परीक्षा भी है।

## जुबानी तीर

पर्यावरण और लद्दाख के अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण आंदोलन करने वाले Sonam Wangchuk को हिरासत में लेना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। लोकतंत्र में संवाद होना चाहिए, दमन नहीं। सरकार को उनकी बात सुननी चाहिए और लद्दाख के लोगों की मांगों को गंभीरता से लेना चाहिए।

**राहुल गांधी (कांग्रेस नेता)**

लद्दाख के पर्यावरण और संवैधानिक अधिकारों की मांग करने वाले सोनम वांगचुक और उनके साथियों को हिरासत में लेना लोकतांत्रिक परंपराओं के खिलाफ है। शांतिपूर्ण आंदोलन को दबाने की कोशिश नहीं होनी चाहिए। सरकार को तुरंत बातचीत का रास्ता अपनाना चाहिए।

**जयराम रमेश (कांग्रेस महासचिव)**

सरकार हर नागरिक की बात सुनने के लिए तैयार है, लेकिन कानून और व्यवस्था बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है। किसी भी आंदोलन को कानून के दायरे में रहकर होना चाहिए। लद्दाख के विकास और लोगों की चिंताओं पर सरकार लगातार काम कर रही है।

**किरेन रिजिजू (भाजपा नेता और केंद्रीय मंत्री)**

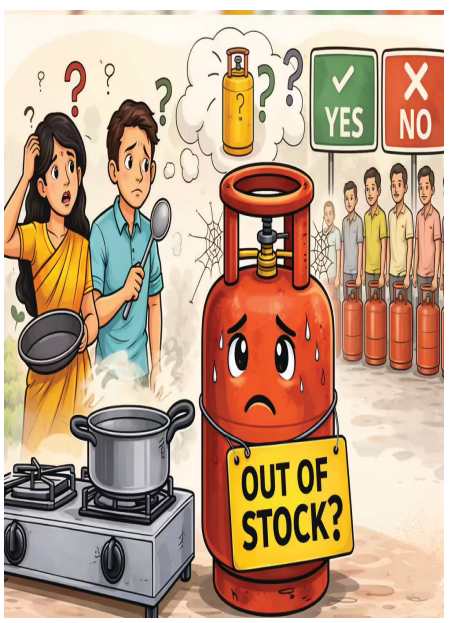


विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

# गिरते बालों को तुरंत रोकने के आयुर्वेदिक उपाय

आज के समय में बालों का गिरना एक आम समस्या बन चुकी है। कम उम्र में ही बहुत से लोग तेज़ी से झड़ते बालों से परेशान हैं। कभी तनाव, कभी गलत खानपान, तो कभी रासायनिक उत्पादों का अत्यधिक उपयोग बालों की जड़ों को कमजोर कर देता है। आयुर्वेद के अनुसार बालों का झड़ना केवल बाहरी समस्या नहीं है, बल्कि यह शरीर के भीतर असंतुलन का संकेत भी हो सकता है। इसलिए आयुर्वेद इस समस्या का समाधान केवल ऊपर से लगाने वाली दवाओं से नहीं, बल्कि शरीर और जीवनशैली को संतुलित करके करता है।

## आयुर्वेद के अनुसार बाल क्यों गिरते हैं

आयुर्वेद में बालों को शरीर की अस्थि धातु का उपधातु माना गया है। जब शरीर में पोषण की कमी, पित्त दोष की वृद्धि या मानसिक तनाव बढ़ जाता है, तो इसका प्रभाव सीधे बालों की जड़ों पर पड़ता है। परिणामस्वरूप बाल कमजोर होकर टूटने लगते हैं।

## कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं

गलत खानपान
अधिक तनाव और अनिद्रा
रासायनिक शैंपू और हेयर प्रोडक्ट्स
प्रदूषण और धूल
पोषक तत्वों की कमी

यदि इन कारणों को समय रहते नियंत्रित कर लिया जाए, तो बालों का गिरना काफी हद तक रोका जा सकता है।

## बाल झड़ना रोकने के प्रभावी आयुर्वेदिक उपाय

### 1. आंवला का नियमित उपयोग

आंवला बालों के लिए सबसे प्रभावी आयुर्वेदिक औषधियों में से एक माना जाता है। इसमें विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जो बालों की जड़ों को मजबूत बनाते हैं।

**उपयोग का तरीका**

आंवला पाउडर को नारियल तेल में मिलाकर हल्का गर्म करें और सप्ताह में दो से तीन बार सिर की मालिश करें। नियमित उपयोग से बालों का झड़ना कम हो सकता है और बाल मजबूत बनते हैं।

### 2. भृंगराज तेल से मालिश

आयुर्वेद में भृंगराज को बालों का राजा कहा जाता है। यह बालों की जड़ों को पोषण देता है और सिर की त्वचा में रक्त संचार बढ़ाता है।

**उपयोग का तरीका**

रात में सोने से पहले भृंगराज तेल से सिर की हल्की मालिश करें और सुबह हर्बल शैंपू से धो लें। यह उपाय बालों के झड़ने को कम करने में मदद कर सकता है।

### 3. मेथी का हेयर मास्क

मेथी के बीज प्रोटीन और निकोटिनिक एसिड से भरपूर होते हैं, जो बालों की जड़ों को मजबूत बनाते हैं।

**उपयोग का तरीका**

मेथी के बीजों को रात भर पानी में भिगो दें। सुबह उन्हें पीसकर पेस्ट बना लें और इसे बालों की जड़ों में लगाएं। लगभग 30 मिनट बाद सिर धो लें।

### 4. एलोवेरा का उपयोग

एलोवेरा सिर की त्वचा को ठंडक देता है और डैंड्रफ को कम करता है, जिससे बालों की जड़ें मजबूत होती हैं।

**उपयोग का तरीका**

ताजा एलोवेरा जेल को सीधे सिर की त्वचा पर लगाएं और 20 मिनट बाद धो लें। सप्ताह में दो बार यह प्रयोग किया जा सकता है।

## खानपान में करें सुधार

आयुर्वेद के अनुसार केवल बाहरी उपचार पर्याप्त नहीं होते। सही आहार भी उतना ही आवश्यक है।

अपने भोजन में इन चीजों को शामिल करें
हरी पत्तेदार सब्जियां
दूध और घी
तिल और बादाम
आंवला और मौसमी फल

इनसे शरीर को आवश्यक पोषण मिलता है और बालों की जड़ें मजबूत होती हैं।

## तनाव से बचना भी जरूरी

अधिक तनाव बालों के झड़ने का एक बड़ा कारण है। योग और ध्यान मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। नियमित प्राणायाम करने से शरीर में ऑक्सीजन का संचार बेहतर होता है और इसका सकारात्मक प्रभाव बालों के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है।

## किन बातों से बचें

बालों को स्वस्थ रखने के लिए कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं

बहुत अधिक रासायनिक शैंपू का उपयोग न करें
बार-बार बालों को गर्म पानी से न धोएं
बालों को जोर से न बांधें

## अत्यधिक फास्ट फूड से बचें

आयुर्वेद के अनुसार बालों का गिरना केवल एक सौंदर्य समस्या नहीं बल्कि शरीर के भीतर असंतुलन का संकेत है। यदि सही आहार, नियमित दिनचर्या और प्राकृतिक औषधियों का उपयोग किया जाए, तो बालों के झड़ने को काफी हद तक रोका जा सकता है।आंवला, भृंगराज, मेथी और एलोवेरा जैसे प्राकृतिक उपाय न केवल बालों को मजबूत बनाते हैं, बल्कि उनकी प्राकृतिक चमक और घनत्व भी बढ़ाते हैं। नियमित देखभाल और संतुलित जीवनशैली अपनाकर स्वस्थ और मजबूत बाल पाए जा सकते हैं।

## पाठकों के सवाल

क्या आपको स्वास्थ्य से जुड़ी कोई समस्या है और आप उसका समाधान आयुर्वेद के माध्यम से जानना चाहते हैं? अब आप अपने सवाल हमें भेज सकते हैं। आपके द्वारा भेजे गए चुनिंदा प्रश्नों का उत्तर अनुभवी आयुर्वेदाचार्य द्वारा दिया जाएगा और उन्हें इस पेज पर प्रकाशित किया जाएगा।

अपने सवाल हमें ईमेल करें
hi@bharatshri.com

कृपया अपने सवाल के साथ अपनी उम्र, शहर और समस्या का संक्षिप्त विवरण अवश्य लिखें, ताकि विशेषज्ञ सही सलाह दे सकें।

# कृष्ण-विरह के अमर गायक थे संत परमानंद दास

## वल्लभाचार्य के शिष्य और भक्ति आंदोलन के प्रमुख स्वर, जिनकी कविता में विरह और प्रेम की अनोखी छटा

संत परमानंद दास जी मध्यकालीन कृष्ण-प्रेम की ध्वजा थे। अष्टछाप के संतकवियों में विरह-गान में वे सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। रात-दिन श्रीकृष्ण के विरह में डूबे रहते थे। रह-रहकर उन्हें व्रजरस-लीला का आवेश छा जाता था। श्रीभगवान को अपना प्रियतम प्राणाधार मानते थे। तन-मन श्यामसुंदर की शोभा-सागर में सदा भीगे रहते थे। उनकी प्रेम-साधना उच्च कोटि की थी। वाणी भगवद्भक्ति-गान में सिद्ध थी। कविता में हृदय की कोमलता और मधुर भावों का दर्शन होता है। वे लीलारसिक संत थे।

### गुरु-कृपा और भक्ति-आंदोलन में योगदान

वे महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे। महाप्रभु की उन पर बड़ी कृपा थी। गोसाईं विठ्ठलनाथ की दृष्टि में वे महान भगवदीय और असाधारण लीलागायक कवि थे। उनकी वाणी ने अकबरकालीन भारत में केंद्रीय राजसत्ता की द्विविधात्मक नीति से लोक-जीवन को सावधान कर भगवान की ओर उन्मुख करने में आचार्य महाप्रभु वल्लभ और उनके आत्मज विठ्ठलनाथ जी के पवित्र भक्ति-आंदोलन में पूरा-पूरा सहयोग दिया। यह आध्यात्मिक अथवा भागवती क्रांति का समय था। परमानंद भगवत्प्रेम की अप्रतिम विभूति थे। कृष्ण के विरह में लाखों पद रचे। सख्य, वात्सल्य और मधुर रस की अनुभूति से मध्यकालीन भक्ति-साहित्य को समृद्ध किया। गुरु के चरण में सर्वस्व समर्पित कर परमानंद प्राप्त किया। अष्टछाप के कवियों ने साहित्य में व्रजभक्ति के सिंदूर कृष्ण का काव्यरूप उतारा। परमानंद परम कृष्णभक्त थे।

### जन्म और बचपन

परमानंद का जन्म संवत् 1550 वि. में मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को कन्नौज में हुआ। पिता सरल-सतोपी और प्रेमी हृदय के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। खेती तथा दान-वृत्ति से परिवार का पालन-पोषण करते थे। जन्म-दिन पर एक विचित्र घटना घटी। एक धनी सेठ ने पिता को बहुत-सा धन दिया। इस अयाचित दान से घर में चारों ओर परम आनंद छा गया। पिता ने प्रसन्न होकर नवजात शिशु का नाम परमानंद रख दिया। पिता साधारण श्रेणी के ब्राह्मण थे। इसलिए परमानंद की शिक्षा-दीक्षा साधारण रही। पर उनमें एक विचित्रता दिखी। घर से प्रायः विरक्त और उदासीन रहने लगे। घर के किसी काम-काज में मन नहीं लगता था।

### युवावस्था और वैराग्य की ओर

एक बार कन्नौज में बहुत बड़ा अकाल पड़ा। शासक ने दंड के रूप में पिता का सारा धन छीन लिया। परिवार पैसे-पैसे के लिए कंगाल हो गया। परमानंद तब युवावस्था में पहुंच चुके थे। थोड़ी-बहुत कविता कर लेते थे। भजन गा लेते थे। भगवान की पूजा में अधिकांश समय बिताते थे। जो कुछ खाने-पीने और पहनने-ओढ़ने को मिल जाता उसी से संतोष करते थे। पिता ने विवाह के लिए जोर डाला। पर परमानंद गृहस्थी के बंधन में नहीं पड़ना चाहते थे। पिता से साफ शब्दों में निवेदन किया कि अब मेरे विवाह की चिंता मत कीजिए। जो कुछ बचे उसका परिवार के पालन-पोषण और साधु-संत तथा अतिथि की सेवा में सदुपयोग कीजिए। पिता के सिर पर धन कमाने की सनक सवार थी। वे धन कमाने विदेश-यात्रा में चले गए। परमानंद छब्बीस साल के हो चुके थे। पिता के जाने के बाद भजन-पूजन तथा कथा-कीर्तन में लग गए। घर पर साधु-संतों की भीड़ लगने लगी। स्वामी परमानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए। साधु हृदय के व्यक्ति को मान-प्रतिष्ठा से बड़ी चिढ़ रहती है। घर से बाहर जाना उचित समझा। मकर स्नान में प्रयाग चले आए। गंगा किनारे कुटी बनाकर कथा-कीर्तन करने लगे। लोग उनके स्वभाव, भगवद्भक्ति और आचार-विचार से बहुत आकर्षित हुए। वैराग्य धीरे-धीरे बढ़ता गया। दूर-दूर से सत्संग और दर्शन के लिए लोग आने लगे। अच्छे संगीतज्ञ और निपुण कवि के रूप में प्रसिद्धि फैली। कुटी में भक्तों का तांता लगा रहता था।

### महाप्रभु वल्लभाचार्य से मिलन

परमानंद जी की कुटी के सामने यमुना के उस पार पुष्टि मार्ग के प्रवर्तक श्रीमदाचार्य महाप्रभु वल्लभ अडैल में रहते थे। परमानंद ने उनके बारे में विशेष सुना था। विजयनगर में कनकाभिषेक की घटना उत्तर भारत में काफी प्रसिद्ध थी। महाप्रभु परम भगवदीय के रूप में विख्यात थे। महाप्रभु ने भी परमानंद को अच्छे कथाकार, कवि, संगीतज्ञ और भगवद्भक्त के रूप में जाना था। दोनों एक-दूसरे से मिलने और सत्संग करने को उत्सुक थे। भगवान की कृपा से एक दिन ऐसा संयोग आया। वल्लभाचार्य का जलघड़िया कपूर प्रायः परमानंद जी के कथा-कीर्तन में जाता था।

परमानंद स्वामी एकादशी को रात में जागरण कर कथा-कीर्तन करते थे। कुटिया में भक्तों की भीड़ लगी रहती थी। एक एकादशी को रात में जागरण चल रहा था। बहुत से भक्त एकत्र होकर कथा-कीर्तन सुन रहे थे। प्रभु की लीला-कथन में आत्मविभोर थे। इधर अडैल में कपूर जलघड़िया का मन छटपटा रहा था। शयन-आरती के बाद वह अडैल से चल पड़ा।

यमुना तट पर कोई नाव नहीं थी। पानी में तैरकर इस पार आ गया। कथा में बैठा ही था कि परमानंद ने विलक्षण दृश्य देखा। नयनों को लगा कि उज्ज्वल नीलमणि सा श्यामवर्ण का शिशु कपूर की गोद में बैठा है। सिर पर मयूर-पिच्छ, भाल में तिलक, कानों में स्वर्ण कुंडल, अलकावली कंधे पर लटक रही है। वे कभी-कभी नवनीतप्रिय का दर्शन करने गोकुल भी जाते थे।

### गोसाईं विठ्ठलनाथ और एक पद

गोसाईं विठ्ठलनाथ उनकी ओर बड़े ध्यान से देखने लगे। संवत् 1641 वि. की भाद्रपद कृष्ण नवमी का मध्याह्न काल था। परमानंद युगल स्वरूप का चिंतन कर रहे थे। गोसाईं जी ने पूछा कि इस समय चित्तवृत्ति कहाँ है। श्रीनाथ जी के अनन्य उपासक परमानंददास की वाणी खुल गई। उन्होंने यह पद सुनायाः

"रावे बैठी तिलक संवारति ।
मृगनैनी कुसुमायुध कर वरि नदसुवन को रूप विचारति ।
दर्पन हाथ सिंगार वनावति, वासर जुग सम टारति ।
अतर प्रीति स्याम सुदर सो हरिसग केलि सभारति ।
वासर गत रजनी व्रज आवत मिलत गोवर्धन प्यारी।
'परमानन्द' स्वामी के सग मुदित भई व्रजनारी।"

### अंतिम समय और रचनाएं

अंत समय में उनकी चित्तवृत्ति राधाकृष्ण की तरस लीला में आसक्त थी। परम आराध्य का चिंतन करते हुए गोलोक की यात्रा की। परमानंददास ने प्रेम का परमानंद-सागर आलोड़ित किया। परमानंददास का पदसंग्रह 'परमानंद-सागर' है।

उन्होंने अनेक सरस पदों की रचना की। इन पदों में कृष्ण-विरह, व्रज-लीला और भक्ति के मधुर भाव भरे पड़े हैं। उनकी वाणी आज भी भक्तों के हृदय को स्पर्श करती है।

# पीरियड्स लीव पर दुनिया में बहस

# राहत या महिलाओं की नौकरी के लिए नई चुनौती?

दुनिया के कई देशों में पीरियड्स लीव को लेकर कानून बने हैं ताकि महिलाओं को महीने में एक या दो दिन आराम मिल सके जब उन्हें तेज दर्द हो। स्पेन यूरोप का पहला देश है जहां 2023 से यह लीव शुरू हुई। यहां महिलाएं डॉक्टर के नोट के साथ तीन दिन तक छुट्टी ले सकती हैं और जरूरत पड़ने पर पांच दिन तक। सरकार सोशल सिक्योरिटी से पैसे देती है ताकि कंपनी पर बोझ न पड़े। लेकिन 2024 तक सिर्फ 1559 बार ही इसका इस्तेमाल हुआ क्योंकि कई महिलाएं शर्म की वजह से बताना नहीं चाहतीं। जापान में पुराना कानून है जहां महिलाएं पीरियड्स के दौरान छुट्टी मांग सकती हैं लेकिन बहुत कम इस्तेमाल होता है। इंडोनेशिया में 2003 से दो दिन की छुट्टी मिलती है जो पहले से बतानी पड़ती है। दक्षिण कोरिया, जाम्बिया, मेक्सिको, ताइवान और पुर्तगाल में भी ऐसी व्यवस्था है। पुर्तगाल में 2025 से एंडोमेट्रियोसिस जैसी बीमारी वाली महिलाओं को तीन दिन मिलते हैं और डॉक्टर का एक बार का नोट काफी है। चीन के कुछ प्रांतों और अर्जेंटीना में भी यह लागू है। भारत में कर्नाटक राज्य ने 2025 में सबसे बड़ा कदम उठाया। यहां 18 से 52 साल की हर महिला को हर महीने एक दिन की पेड लीव मिलती है यानी साल में 12 दिन। कोई डॉक्टर का सर्टिफिकेट नहीं चाहिए और यह सरकारी और प्राइवेट दोनों जगहों पर लागू है। यह लीव अगले महीने में नहीं जोड़ी जा सकती। लेकिन कई देशों

में यह नीति कम इस्तेमाल होती है क्योंकि महिलाएं डरती हैं कि साथी उन्हें कमजोर समझेंगे या बॉस नाराज होंगे। इससे पता चलता है कि पीरियड्स लीव अच्छी बात है लेकिन इसे आसान बनाना जरूरी है ताकि महिलाएं बिना शर्म के इस्तेमाल कर सकें और काम पर उनका प्रदर्शन बेहतर रहे। कुल मिलाकर दुनिया में यह नीति स्वास्थ्य को महत्व दे रही है लेकिन स्टिग्मा की वजह से पूरी तरह सफल नहीं हो पाई है।

## भारत में पीरियड्स लीव का नया विकास

भारत में पीरियड्स लीव पर लंबे समय से चर्चा चल रही है लेकिन अब कर्नाटक राज्य ने 2025 में इसे सभी क्षेत्रों के लिए अनिवार्य कर दिया है। यहां सरकारी दफ्तरों से लेकर आईटी कंपनियों और फैक्टरियों तक हर जगह 18 से 52 साल की महिलाओं को हर महीने एक दिन की छुट्टी मिलेगी। साल भर में 12 दिन हो जाते हैं और यह लीव आगे नहीं बढ़ाई जा सकती। कोई मेडिकल सर्टिफिकेट नहीं मांगते जिससे महिलाओं को आसानी हो। इस नीति से करीब तीन लाख 50 हजार से चार लाख महिलाओं को फायदा होगा जो फॉर्मल जॉब्स में हैं। लेकिन देश के छह लाख घरेलू कामगार और दिहाड़ी मजदूर महिलाएं अभी बाहर हैं। पहले बिहार में भी कुछ छुट्टी थी लेकिन कर्नाटक पहला राज्य है जो पूरे प्राइवेट सेक्टर को कवर करता है। केंद्र सरकार पर भी दबाव है लेकिन अभी पूरे देश में एक जैसा कानून नहीं है। कई कंपनियां खुद से छुट्टी दे रही हैं जैसे कुछ आईटी फर्म्स में दो दिन। अध्ययनों से पता चलता है कि भारत में 40 प्रतिशत महिलाओं को पीरियड्स से पहले दर्द होता है और 80 प्रतिशत को तेज दर्द। बिना लीव के वे बीमार छुट्टी लेती हैं या काम करते रहती हैं जिससे उत्पादकता कम होती है। कर्नाटक की नीति से महिलाओं का स्वास्थ्य बेहतर होगा और वे ज्यादा खुश रहकर काम करेंगी। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि छोटी कंपनियों में यह बोझ बन सकता है। फिर भी यह कदम महिलाओं की गरिमा बढ़ाता है और दिखाता है कि भारत धीरे-धीरे महिलाओं के स्वास्थ्य को गंभीरता से ले रहा है। अगर दूसरे राज्य भी ऐसे कदम उठाएं तो पूरे देश में फायदा होगा।

## सुप्रीम कोर्ट क्यों सावधान है पीरियड्स लीव पर?

सुप्रीम कोर्ट ने मार्च 2026 में एक याचिका को खारिज कर दिया जिसमें पूरे देश में अनिवार्य पीरियड्स लीव मांगी गई थी। चीफ जस्टिस सूर्या कांत और जस्टिस जोयमल्या बागची की बेंच ने कहा कि अगर कानून बना दिया तो कोई भी कंपनी महिलाओं को नौकरी नहीं देगा। उन्होंने कहा कि दो दिन हर महीने की अनिवार्य छुट्टी से नियोक्ता महिलाओं को महंगा या कमजोर समझेंगे। कोर्ट ने चेतावनी दी कि इससे महिलाओं में खुद को पुरुषों से कम समझने का डर पैदा होगा जो उनकी तरक्की रोक देगा। जजों ने कहा कि ज्यूडिशियरी जैसे क्षेत्रों में भी जिम्मेदारी नहीं दी जाएगी। कोर्ट ने माना कि महिलाओं का स्वास्थ्य जरूरी है लेकिन अनिवार्य कानून से नुकसान ज्यादा होगा। उन्होंने कहा कि कंपनियां खुद से छुट्टी दें तो ठीक है लेकिन कानून बना दिया तो नौकरियों में भेदभाव बढ़ेगा। याचिकाकर्ता ने मांगा था कि मेटरनिटी बेनिफिट एक्ट में इसे जोड़ा जाए लेकिन कोर्ट ने केंद्र सरकार को सुझाव दिया कि वे सभी पक्षों से बात करके नीति बनाएं। कोर्ट ने कर्नाटक की नीति का जिक्र किया लेकिन कहा कि पूरे देश में जबरन लागू करना गलत होगा। यह फैसला दिखाता है कि सुप्रीम कोर्ट महिलाओं के हक की रक्षा करना चाहता है लेकिन तरीका सही होना चाहिए। वे चाहते हैं कि महिलाएं बराबरी पर रहें और कोई नीति उनकी नौकरी के मौके कम न करे। कोर्ट का यह रुख सोचने पर मजबूर करता है कि अच्छे इरादे भी अगर गलत तरीके से लागू हों तो नुकसान पहुंचा सकते हैं।

# छपरा मामले को लेकर पुलिस पर भड़के पप्पू यादव

बिहार के छपरा में एक बेटी के साथ हुई भयावह और अमानवीय घटना को लेकर सियासी पारा गरमा गया है. इस जघन्य अपराध के बाद पुलिस की कार्यशैली पर गंभीर सवाल उठने लगे हैं. सांसद पप्पू यादव ने इस मामले में बिहार पुलिस को आड़े हाथों लेते हुए उस पर मृतक बेटी और उसके पीड़ित परिजनों को कलंकित करने का संगीन आरोप लगाया है. पप्पू यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है. उन्होंने पुलिस प्रशासन को सख्त लहजे में चेतावनी देते हुए कहा कि वह अपनी इस शर्मनाक हरकत से बाज आए।

## धार्मिक स्थलों पर भी LPG की किल्लत

देशभर में एलपीजी गैस सिलेंडर को लेकर त्राहिमाम मचा है तो वहीं धार्मिक स्थल भी अब इससे अछूते नहीं रहे. LPG गैस की किल्लत का असर अब मंदिरों तक पहुंच गया है. इस वजह से मंदिर में बनाए जाने वाले प्रसाद को भी सीमित कर दिया है. नोएडा के इस्कॉन मंदिर में अब प्रसाद के रूप में सिर्फ खिचड़ी और आलू की सब्ज़ी परोसी जा रही है। खिचड़ी और आलू की सब्जी बनाने में गैस की खपत कम होती है इसलिए जहां रविवार के दिन पनीर की

सब्ज़ी, छोले, पूरी, हलवा, गुलाब जामुन बनाया जाता था वो अब घटकर सिर्फ खिचड़ी और आलू की सब्जी के रूप में बचा है।

## औरंगाबाद में जयमाला के दौरान छज्जा टूटने से बड़ा हादसा

औरंगाबाद जिले के ओबरा थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले मंझियावां गांव में कल रात (14 मार्च) एक शादी समारोह के दौरान एक बेहद दर्दनाक और बड़ा हादसा हो गया.. यहां खुशी के माहौल में जयमाला के समय अचानक एक पोर्टिको भरभराकर गिर गया. इस हादसे में मलबे के नीचे दबने से दो लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि 25 अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं. इस हृदयविदारक घटना ने पल भर में ही शादी के मंगल गीतों को चीख-पुकार और मातम में बदल दिया।

## 22 मार्च को दिल्ली में नेशनल लोक अदालत होगी आयोजित

राजधानी दिल्ली में लंबित ट्रैफिक चालानों के निपटारे के लिए एक बड़ा अवसर सामने आया है। दिल्ली राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से दिल्ली ट्रैफिक पुलिस द्वारा 22 मार्च 2026, रविवार को 'नेशनल लोक अदालत' आयोजित की जा रही है. इस विशेष पहल के तहत दिल्ली के विभिन्न न्यायालय परिसरों में सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक लोगों को अपने लंबित चालान और नोटिसों का निपटारा कराने का अवसर मिलेगा।

## सावधान दिल्ली! LPG-PNG कनेक्शन कटने का डर दिखाकर ठगी

मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव का असर सिर्फ वैश्विक तेल और गैस बाजार तक ही सीमित नहीं रहा है, बल्कि अब इसका फायदा साइबर अपराधी भी उठाने लगे हैं. भारत में गैस सप्लाई को लेकर लोगों की चिंता के बीच ठग नए तरीके अपनाकर LPG सिलेंडर जल्दी दिलाने या PNG कनेक्शन कटने का डर दिखाकर लोगों से पैसे ऐंठ रहे हैं. दिल्ली पुलिस ने इस तरह की ठगी को लेकर विशेष चेतावनी जारी की है। ईरान और इजराइल-अमेरिका के बीच बढ़ते टकराव के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल और गैस की आपूर्ति प्रभावित हुई है. इसका असर भारत में भी महसूस किया जा रहा है. हालांकि आम लोगों को गैस की कमी का सामना न करना पड़े, इसके लिए तेल कंपनियों ने सिलेंडर बुकिंग से जुड़े कुछ नियमों में बदलाव किए हैं।

# ध्वनि और वाइब्रेशन के माध्यम से मिलती है गुरु कृपा

@ भारतश्री ब्यूरो

गुरु और संत केवल शरीर रूप में ही नहीं, बल्कि अपनी ध्वनि, अपनी ऊर्जा और अपनी आत्मिक तरंगों के माध्यम से भी सदैव अपने शिष्यों के साथ उपस्थित रहते हैं। जब भी हम पाठ करते हैं, गुरु का ध्यान करते हैं या परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं, उसी क्षण वह दिव्य चेतना हमारे आसपास सक्रिय हो जाती है।

जिसे हम बार-बार याद करते हैं, वह हमारे जीवन में निरंतर उपस्थित रहने लगता है। उसी प्रकार जब साधक अपने गुरु या परमात्मा को निरंतर स्मरण करता है, तो वह उनकी उपस्थिति को अपने भीतर महसूस करने लगता है। यह अनुभव ऐसा होता है मानो गुरुदेव हर पल हमारे साथ चल रहे हों।

### गुरु केवल शरीर नहीं, हर स्वरूप में साथ होते हैं

गुरु का साथ केवल भौतिक उपस्थिति तक सीमित नहीं होता। वह चेतना के रूप में हर समय, हर परिस्थिति में हमारे साथ रहते हैं।अक्सर ऐसा होता है कि हम किसी व्यक्ति को याद करते हैं और थोड़ी देर बाद वही व्यक्ति हमारे सामने आ जाता है। जब साधारण स्मरण से ऐसा संभव है, तो यदि हम परमात्मा और गुरु को हर पल याद करें, तो उनकी कृपा और निकटता का अनुभव क्यों नहीं होगा ?वास्तव में परमात्मा हमारे भीतर ही स्थित है। वह प्रतीक्षा करता है कि कब कोई उसे पुकारे, कब कोई साधना और पाठ के माध्यम से उसे अनुभव करने का प्रयास करे। जब साधक की अंतःदृष्टि जागृत होती है और उसकी चेतना तैयार हो जाती है, तब वह परमात्मा और गुरु के दिव्य स्वरूप को महसूस कर सकता है।

### जागृति का संदेश

इतिहास में अनेक महान आत्माओं ने अपनी साधना से आत्मजागृति प्राप्त की और फिर उस ज्ञान को संसार के साथ साझा किया।भगवान बुद्ध ने भी अपने भीतर की चेतना को जागृत किया, अपने सभी चक्रों को सक्रिय किया और फिर यह अनुभव केवल अपने तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने इसे पूरे विश्व के कल्याण के लिए फैलाया।आज पूरी दुनिया उनके ज्ञान से लाभ उठा रही है। जिसने उस मार्ग को समझ लिया, उसने परमात्मा का अनुभव कर लिया। लेकिन जो केवल भोग और मोह में उलझा रहा, वह उसी स्थिति में रह गया।

### बच्चों का व्यवहार भी बड़ों से ही सीखता है समाज

जब मनुष्य जन्म लेता है, तो परमात्मा उसे एक स्वस्थ और पूर्ण शरीर देता है। न किसी प्रकार की बीमारी होती है और न ही कोई मानसिक विकार लेकिन धीरे-धीरे मनुष्य अपनी आदतों, स्वभाव और नकारात्मक भावनाओं से अपने शरीर और मन को कमजोर कर लेता है।

ईर्ष्या, क्रोध और स्वार्थ जैसी भावनाएं उसके व्यक्तित्व को विकृत कर देती हैं।बच्चे अपने बड़ों को देखकर ही व्यवहार सीखते हैं। यदि बड़े अपने माता-पिता या समाज के प्रति सम्मान नहीं दिखाते, तो बच्चे भी वही व्यवहार दोहराने लगते हैं। इसलिए यह बड़ों की जिम्मेदारी है कि वे अपने आचरण से सही संस्कार दें।

### प्रलोभन के कारण छूट जाता है पाठ

मनुष्य को करोड़ों जन्मों के बाद यह दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त होता है। यह अवसर आत्मोन्नति और मुक्ति का मार्ग खोल सकता है।लेकिन जीवन में ऐसे कई पड़ाव आते हैं जब प्रलोभन सामने खड़े हो जाते हैं। विशेषकर युवावस्था में मन अनेक आकर्षणों की ओर भागता है और साधना से दूर होने लगता है। ऐसे समय में पाठ और ध्यान ही वह साधन हैं जो मनुष्य को सही दिशा दिखाते हैं। इसलिए परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारी बुद्धि, वाणी और शरीर को पवित्र बनाए ताकि हम दुर्गा सप्तशती, मृत्युंजय मंत्र, गणेश स्तुति, श्रीराम और श्रीकृष्ण के नाम का पाठ करके अपने जीवन को सार्थक बना सकें।

### भक्ति के लिए ममत्व आवश्यक है

पाठ और साधना केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं हैं, बल्कि वे हमारे विचार, आचरण और जीवन शैली को भी बदलते हैं।शुरुआत में मन भटकता है, साधना में ध्यान नहीं लगता और कई बार मन करता है कि इसे छोड़ दिया जाए। लेकिन धीरे-धीरे अभ्यास के साथ यह साधना जीवन का हिस्सा बन जाती है। तब ऐसा महसूस होता है कि यदि एक दिन भी पाठ नहीं किया, तो जीवन में कुछ अधूरा रह गया।साधना मनुष्य के भीतर ममत्व और करुणा के भाव जगाती है। सामान्यतः यह गुण स्त्री स्वभाव से जोड़ा जाता है, लेकिन वास्तव में यह हर मनुष्य में होना चाहिए। परमात्मा की भक्ति के लिए मन में वही कोमलता, समर्पण और प्रेम होना चाहिए। इसी कारण कहा गया है कि परमात्मा को पाने के लिए पुरुष को भी अपने भीतर स्त्री जैसी करुणा और ममत्व को जागृत करना पड़ता है।

# क्यों विशेष है मां का पाठ

मां दुर्गा के पाठ का जपजन्य पुण्य कभी समाप्त नहीं होता जबकि अन्य पाठों के जपजन्य पुण्य समाप्त हो जाते हैं। कौलन को जानकर परिहार, शापोद्धार आदि विधि से पाठ करने से साधक की प्रत्येक मनोकामना पूरी होती है। यदि विधिपूर्वक उत्कील न करके जाप करता है तो उसे हानि होती है और वह विनाश को प्राप्त हो जाता है। विधिपूर्वक पाठ को जागृत करके करने से कल्याण होता है क्योंकि सारे मंत्र सोए होते हैं, उन्हें जागृत करने के लिए उत्कीलन करना बहुत आवश्यक होता है। पाठ के विषय में भगवान ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र नारद को कहा था कि यह अक्षय पाठ है जिसे इन्द्रादि देवताओं ने भगवान नारायण के मुख से सुना था।

इस पाठ के बारे में भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी को बताया था कि यह साक्षात अलौकिक विज्ञान है। इसका पाठ करने, इससे जानने, समझने, पढ़ने व इसे धारण करने से त्रिलोक पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। यह पाठ सब पाठों से अधिक सर्वपावन है तथा सभी पुण्यों का दाता है। यह सब पापों का नाश करने वाला तथा समस्त दुखों का निवारण करने वाला है। जो इसे नियमित रूप से तीन संध्याओं में पाठ करता है, उसे सभी यज्ञों का फल प्राप्त हो जाता है। इस पाठ के जप मात्र से ही व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह सभी वेद वेत्ताओं और शास्त्रों के ज्ञाताओं से श्रेष्ठ हो जाता है इसमें जरा भी संदेह नहीं है। लेकिन किसी तत्ववेत्ता, महाब्रह्मर्षि सद्गुरु से निष्कीलन, उत्कीलन का ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही पाठ करना चाहिए। भगवान ब्रह्मा जी ने कहा कि मैं इसलिए तुम्हें उत्कीलन मंत्र दे रहा हूं।

### क्या है विशुद्ध ज्ञान

ऋषि मार्कण्डेय ने भगवान शिव की स्तुति करते हुए कहा कि विशुद्ध ज्ञान ही जिनका शरीर है, तीन वेद ही जिनके दिव्य नेत्र हैं, जो कल्याण प्राप्ति के हेतु हैं तथा अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र का मुकुट धारण करते हैं, उन भगवान शिव को नमस्कार है। यहां पर जो विशुद्ध ज्ञान जिनका शरीर है का उल्लेख किया गया है तो यह है क्या? किसी को नहीं पता है। यह विशुद्ध शरीर मां दुर्गा अर्थात मां पार्वती का है। ये आगे कहते हैं कि शापरूपी कीलक का जो निवारण करने वाला है, उसे जानना चाहिए। अर्थात मंत्रों की सिद्धि में जो विघ्न उपस्थित करने वाला शापरूपी कीलक है, उसका निवारण श्रेष्ठ करके ही पाठ करना चाहिए। यद्यपि इसके बिना मंत्रों का जप करने में भी जो लगा रहता है वह भी कल्याण का भागी होता है लेकिन वह स्थायी नहीं होता। जो अन्य मंत्रों का जाप न करके केवल माता देवी की ही स्तुति करता है, उस स्तुति मात्र से ही सच्चिदानंद स्वरूपिणी देवी सिद्ध हो जाती है। उन्हें अपने कार्य की सिद्धि के लिए औषधि तथा किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं रहती। बिना जप के ही उनके उच्चाटन आदि सभी अभिचारिक कर्म सिद्ध हो जाते हैं। इतना ही नहीं उनकी संपूर्ण अभीष्ट वस्तुएं भी सिद्ध हो जाती हैं।

### दैवव्यपाश्रय के बिना कोई औषधि काम नहीं करती

जिस प्रकार से विश्व भर में प्रदूषण और पर्यावरण बढ़ रहा नी है और हानिकारक कीटाणुओं का हमला हो रहा है,एलोपैथिक दवाइयां निस्तेज हो गई हैं। इन दवाइयों से कोई रोग साध्य होने की बजाय असाध्य हो जाता है। किसी भी असाध्य रोग का निवारण संभव नहीं होता है ऐसे में भगवान शिव, ब्रह्मा और विष्णु को मां दुर्गा ने दैवव्यपाश्रय का ज्ञान दिया और भगवान ठ शिव ने यही ज्ञान महाब्रह्मर्षियों को दिया। इसी माध्यम से सुश्रुत न और चरक आदि की परंपरा चली। दैवव्यपाश्रय भी उत्कीलन पर ही आधारित है क्योंकि यह आयुर्वेद का आठवां अंग है।बिना उत्कील मंत्र के कोई भी औषधि जागृत नहीं होती।

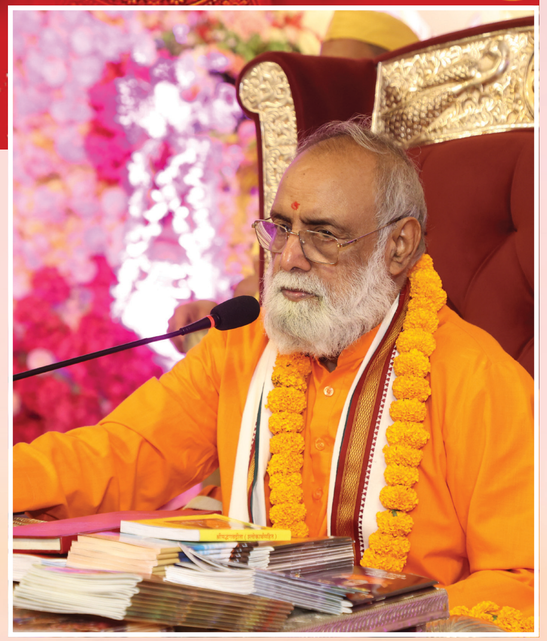

## दरोगा भर्ती परीक्षा के एक सवाल से उठा बड़ा विवाद, पंडित विकल्प पर मचा हंगामा

# सीएम योगी के सख्त निर्देश के बाद भर्ती बोर्ड हरकत में, जांच और कार्रवाई की तैयारी

@ मनीष पांडेय

उत्तर प्रदेश में चल रही दरोगा भर्ती परीक्षा के दौरान एक ऐसा सवाल सामने आया जिसने पूरे प्रदेश में बहस छेड़ दी। यह सवाल सामान्य हिंदी के प्रश्नपत्र में पूछा गया था। सवाल था -अवसर के हिसाब से बदल जाने वाले को क्या कहेंगे?इसके चार विकल्प दिए गए थे – पंडित, अवसरवादी, निष्कपट और सदाचारी। जैसे ही अभ्यर्थियों की नजर इस सवाल पर पड़ी, कई लोगों को यह आपत्तिजनक लगा। परीक्षा खत्म होने के बाद यह सवाल तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। देखते ही देखते यह मुद्दा इतना बड़ा बन गया कि राजनीतिक गलियारों तक पहुंच गया।

### सरकार तक पहुंचा मामला

मामला बढ़ने के बाद यह सीधे प्रदेश सरकार तक पहुंच गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस पूरे प्रकरण को गंभीरता से लिया और सभी भर्ती बोर्डों को सख्त निर्देश दिए।उन्होंने साफ कहा कि किसी भी परीक्षा या सरकारी प्रक्रिया में जाति और धर्म को लेकर अमर्यादित टिप्पणी बिल्कुल स्वीकार नहीं की जाएगी। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि अगर कोई संस्था या अधिकारी बार-बार ऐसी गलती करता है तो उसे प्रतिबंधित करने तक की कार्रवाई की जा सकती है।मुख्यमंत्री के इस बयान के बाद पूरे मामले को लेकर प्रशासनिक स्तर पर हलचल तेज हो गई।

प्रदेश के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने भी इस विवाद पर कड़ा रुख दिखाया। उन्होंने कहा कि इस तरह का सवाल स्वीकार्य नहीं है।उन्होंने स्पष्ट कहा कि इस पूरे मामले की जांच कराई जाएगी और अगर किसी की गलती सामने आती है तो उसके खिलाफ कार्रवाई तय है। उनके बयान के बाद यह साफ हो गया कि सरकार इस विवाद को हल्के में लेने के मूड में नहीं है।

> किसी भी जाति, पंथ या समुदाय की गरिमा और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाली टिप्पणी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। भर्ती बोर्डों को निर्देश दिए गए हैं कि ऐसी कोई बात प्रश्नपत्र या प्रक्रिया में न आए।
> **योगी आदित्यनाथ (मुख्यमंत्री , उत्तर प्रदेश)**

यह मुद्दा केवल सोशल मीडिया तक सीमित नहीं रहा। भाजपा के तीन ब्राह्मण विधायक शलभ मणि त्रिपाठी, प्रकाश द्विवेदी और रमेश मिश्र ने भी इस पर कड़ी आपत्ति जताई।तीनों विधायकों ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर मांग की कि इस मामले की जांच कर जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई की जाए। उनका कहना था कि इस तरह के सवाल समाज के किसी वर्ग की भावनाओं को आहत कर सकते हैं और भविष्य में ऐसी गलतियों से बचना जरूरी है।

> "उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती परीक्षा में आए एक प्रश्न को लेकर जो विकल्प दिए गए उन पर हमें कड़ी आपत्ति है। सरकार ने गंभीरता से संज्ञान लिया है। किसी भी प्रश्न से किसी समाज या वर्ग की गरिमा को ठेस पहुंचती है तो यह बिल्कुल स्वीकार्य नहीं है। इस मामले की तत्काल जांच के निर्देश दिए गए हैं और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।"
> **बृजेश पाठक (उप मुख्यमंत्री , उत्तर प्रदेश)**

### भर्ती परीक्षा का बड़ा पैमाना

दरअसल, यह विवाद ऐसे समय सामने आया जब पूरे प्रदेश में दरोगा भर्ती परीक्षा चल रही थी। यह परीक्षा दो दिनों तक आयोजित की गई।प्रदेश के सभी 75 जिलों में 1090 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे। परीक्षा दो पालियों में कराई जा रही थी। पहली पाली सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक और दूसरी पाली दोपहर 3 बजे से शाम 5 बजे तक रखी गई।इस भर्ती के जरिए 4,543 दरोगा पदों पर नियुक्ति की जानी है।

### लाखों अभ्यर्थियों की उम्मीद

इस भर्ती के लिए प्रदेश भर से करीब 15,75,760 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। इनमें 11,66,386 पुरुष और 4,09,374 महिला अभ्यर्थी शामिल हैं।इतनी बड़ी संख्या में युवाओं का भविष्य इस परीक्षा से जुड़ा हुआ है। यही वजह है कि परीक्षा से जुड़ा कोई भी विवाद तुरंत चर्चा का विषय बन जाता है।

दरोगा भर्ती परीक्षा के पहले दिन एक और मुद्दा सामने आया। कुछ अभ्यर्थियों ने आरोप लगाया कि परीक्षा केंद्रों पर प्रवेश से पहले उनसे कलावा उतरवाया गया और महिला अभ्यर्थियों से मंगलसूत्र हटाने के लिए कहा गया।इस बात को लेकर भी सोशल मीडिया पर काफी चर्चा हुई और कई लोगों ने इसे धार्मिक आस्था से जोड़कर देखा।विवाद बढ़ने के बाद उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड (UPPBB) ने रविवार सुबह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर एक पोस्ट जारी की।

इस पोस्ट में बोर्ड ने स्पष्ट किया कि परीक्षा केंद्रों पर अभ्यर्थियों से धार्मिक पहचान से जुड़ी चीजें जैसे कलावा या मंगलसूत्र उतरवाने के लिए नहीं कहा जाएगा।बोर्ड ने यह भी कहा कि केवल वही वस्तुएं हटवाई जाएंगी जो परीक्षा की सुरक्षा व्यवस्था के अनुसार प्रतिबंधित हैं।परीक्षा केंद्रों के बाहर खड़े कई अभ्यर्थियों ने कहा कि वे केवल अपनी परीक्षा पर ध्यान देना चाहते हैं।

# पांच राज्यों में चुनाव का बिगुल, अप्रैल में मतदान और 4 मई को आएंगे नतीजे

## बंगाल में दो चरणों में वोटिंग, बाकी चार राज्यों में एक ही दिन मतदान; 17.4 करोड़ मतदाता करेंगे फैसला

@ शोभित यादव

देश में एक बार फिर चुनावी माहौल बन गया है। रविवार को चुनाव आयोग ने पांच राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया। इसके साथ ही इन राज्यों में राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। सत्ताधारी दल अपनी उपलब्धियां गिनाने में जुट गए हैं, तो विपक्ष सरकार को घेरने की रणनीति बनाने लगा है।मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में चुनाव कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि असम, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और पुडुचेरी में विधानसभा चुनाव कराए जाएंगे। इन राज्यों में कुल मिलाकर 17.4 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे और 824 सीटों पर प्रतिनिधियों का चुनाव होगा।चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही इन सभी राज्यों में आचार संहिता लागू हो गई है। अब सरकारें कोई नई योजना या बड़ी घोषणा नहीं कर सकेंगी।

### किस राज्य में कब होगा मतदान

चुनाव आयोग के कार्यक्रम के अनुसार इस बार अधिकांश राज्यों में चुनाव एक ही चरण में कराए जाएंगे।तमिलनाडु में 23 अप्रैल को मतदान होगा।केरल, असम और पुडुचेरी में 9 अप्रैल को वोट डाले जाएंगे।पश्चिम बंगाल में चुनाव दो चरणों में होंगे। यहां 23 अप्रैल और 29 अप्रैल को मतदान कराया जाएगा।पांचों राज्यों के चुनाव परिणाम 4 मई को घोषित किए जाएंगे।

अगर पिछली बार यानी 2021 के चुनावों की बात करें तो तब चुनाव कार्यक्रम 26 फरवरी को घोषित किया गया था। उस समय चुनाव कई चरणों में कराए गए थे।सबसे ज्यादा चरण पश्चिम बंगाल में थे, जहां आठ चरणों में मतदान हुआ था। वहीं असम में तीन चरणों में वोटिंग हुई थी। दूसरी ओर तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी में एक ही चरण में मतदान कराया गया था।इस बार चुनाव आयोग ने प्रक्रिया को अपेक्षाकृत सरल रखने की कोशिश की है।

### मतदाता सूची में बड़ा बदलाव

इन चुनावों से पहले मतदाता सूची को भी अपडेट किया गया है। चुनाव आयोग ने बताया कि जिन पांच राज्यों में चुनाव होने जा रहे हैं, उनमें स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (SIR) के बाद बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं।सबसे ज्यादा बदलाव तमिलनाडु में हुआ है। यहां पहले मतदाता सूची में 6 करोड़ 41 लाख से ज्यादा वोटर दर्ज थे। लेकिन करीब चार महीने चली प्रक्रिया के बाद 74 लाख से अधिक नाम सूची से हटा दिए गए। अब राज्य में लगभग 5 करोड़ 67 लाख मतदाता पंजीकृत हैं।इसके बाद दूसरा स्थान पश्चिम बंगाल का है, जहां करीब 58 लाख मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं।केरल में लगभग 8 लाख, असम में करीब 2 लाख और पुडुचेरी में करीब 77 हजार नाम सूची से हटाए गए हैं। पांचों राज्यों में सबसे ज्यादा चर्चा पश्चिम बंगाल के चुनाव की हो रही है। यहां पिछले 14 वर्षों से ममता बनर्जी मुख्यमंत्री हैं और लगातार तीन बार से उनकी पार्टी सत्ता में है।इस बार भी मुख्य मुकाबला तृणमूल कांग्रेस और भाजपा के बीच माना जा रहा है। अगर ममता बनर्जी इस चुनाव में जीत हासिल करती हैं तो वह लगातार चौथी बार मुख्यमंत्री बनने वाली देश की पहली महिला नेता बन जाएंगी।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

# कुंभ की भीड़ से सुर्खियों तक और अब शादी पर सवाल

## मोनालिसा भोंसले की कहानी अब विवादों के घेरे में

**प्रयागराज कुंभ मेले में माला बेचते एक वीडियो से अचानक चर्चा में आई मोनालिसा भोंसले की शादी अब राजनीतिक और सामाजिक बहस का विषय बन गई है। फिल्म निर्देशक सनोज मिश्रा ने इस रिश्ते को लेकर गंभीर आरोप लगाए हैं और मामले को मुख्यमंत्री के सामने उठाने की बात कही है।**

@ आनंद मीणा

प्रयागराज के कुंभ मेले की विशाल भीड़ में हर साल लाखों चेहरे आते हैं और गुम हो जाते हैं। लेकिन कभी-कभी उसी भीड़ से कोई एक चेहरा ऐसा निकल आता है, जो अचानक पूरे देश की नजरों में आ जाता है।साल 2025 के कुंभ मेले में भी ऐसा ही हुआ।संगम के आसपास की गलियों में एक युवती माला और रुद्राक्ष बेच रही थी। वह साधारण कपड़ों में थी, चेहरे पर हल्की मुस्कान और आवाज में अपनापन। श्रद्धालु उसके पास आते, माला खरीदते और आगे बढ़ जाते।इसी दौरान किसी ने उसका वीडियो बना लिया। वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड हुआ और देखते ही देखते वायरल हो गया।कुछ ही दिनों में लोग उस लड़की को पहचानने लगे। उसका नाम था मोनालिसा भोंसले।मध्य प्रदेश के महेश्वर शहर की रहने वाली मोनालिसा घुमंतू पारधी समुदाय से आती हैं। अचानक मिली इस पहचान ने उसकी जिंदगी को बदल दिया। लोग उसकी कहानी जानने लगे और मीडिया ने भी उसमें दिलचस्पी दिखानी शुरू कर दी।लेकिन शायद किसी ने नहीं सोचा था कि कुछ ही महीनों बाद उसकी जिंदगी एक बड़े विवाद का हिस्सा बन जाएगी।

### शादी और अचानक उठा विवाद

हाल ही में सामने आई जानकारी के अनुसार मोनालिसा भोंसले ने 11 मार्च को एक मुस्लिम युवक फरमान खान से शादी कर ली।बताया गया कि यह शादी केरल के अरुमानूर में स्थित नैनार मंदिर में हुई।शादी की खबर सामने आते ही सोशल मीडिया और स्थानीय स्तर पर चर्चाओं का दौर शुरू हो गया। कुछ लोगों ने इसे दो युवाओं के व्यक्तिगत फैसले के रूप में देखा, लेकिन कुछ लोगों ने इस पर सवाल भी उठाने शुरू कर दिए।इसी बीच फिल्म निर्देशक सनोज मिश्रा ने इस मामले को लेकर गंभीर आरोप लगाए।

### -फिल्म निर्देशक के आरोप

रविवार को सनोज मिश्रा महेश्वर पहुंचे और मोनालिसा के परिवार से मुलाकात की।इसके बाद उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि यह मामला साधारण नहीं है और इसकी जांच होनी चाहिए।मिश्रा ने दावा किया कि यह मामला लव जिहाद से जुड़ा हो सकता है। उन्होंने कहा कि वह इस पूरे घटनाक्रम को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव के सामने उठाने की कोशिश करेंगे।उनका कहना था कि परिवार भी अब इस घटना को लेकर चिंतित है और उन्हें लगता है कि लड़की को किसी तरह के प्रभाव में लाया गया हो सकता है।मिश्रा ने यह भी कहा कि कुछ संगठन बेरोजगार युवाओं को पैसे देकर हिंदू लड़कियों को प्रेम जाल में फंसाने का काम करते हैं।हालांकि उनके इन आरोपों की आधिकारिक पुष्टि अभी तक नहीं हुई है।

### फिल्म से जुड़ा एक और पहलू

सनोज मिश्रा ने बातचीत के दौरान एक और बात कही, जिसने पूरे मामले को और जटिल बना दिया।उन्होंने बताया कि उनकी आने वाली फिल्म द डायरी ऑफ मणिपुर में मोनालिसा को मुख्य भूमिका के लिए चुना गया था।यह फिल्म कथित तौर पर धर्म परिवर्तन के मुद्दे पर आधारित है।मिश्रा का आरोप है कि इसी वजह से उन्हें और उनकी विचारधारा को निशाना बनाया गया। उनका कहना है कि मोनालिसा का ब्रेनवॉश किया गया और उसे इस रिश्ते में फंसाया गया।उनके शब्दों में, यह पूरा मामला किसी फिल्म की पटकथा की तरह लगता है, जिसमें हर घटना पहले से तय दिखाई देती है।

### केरल में शादी क्यों?

फिल्म निर्माता ने यह भी सवाल उठाया कि शादी केरल में ही क्यों हुई।उन्होंने कहा कि अगर यह एक सामान्य रिश्ता था, तो इसे लेकर इतनी दूर जाकर शादी करने की जरूरत क्यों पड़ी।मिश्रा के अनुसार, इस रिश्ते को अब सांप्रदायिक सौहार्द के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।उन्होंने एक सवाल भी उठाया।उनका कहना था कि अगर लड़का हिंदू होता और लड़की मुस्लिम होती, तो क्या समाज उसी तरह इस रिश्ते को स्वीकार करता।

### परिवार की चिंता

मोनालिसा के परिवार के कुछ सदस्यों ने भी इस शादी को लेकर चिंता जताई है।मुलाकात के दौरान परिवार के लोगों ने बताया कि इस घटना के बाद उन्हें समाज में कई तरह की बातें सुननी पड़ रही हैं।परिवार के लोगों का कहना है कि इस वजह से उन्हें सामाजिक अपमान का सामना करना पड़ रहा है।परिवार के एक सदस्य ने यह भी आरोप लगाया कि फरमान पहले मोनालिसा को अपनी बहन कहकर संबोधित करता था।हालांकि इस दावे की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है।

### उम्र को लेकर भी विवाद

इस पूरे मामले में एक और विवाद सामने आया है, जो मोनालिसा की उम्र को लेकर है।मोनालिसा के चाचा विजय भोंसले का कहना है कि उसका जन्म वर्ष 2009 में हुआ था और वह अभी नाबालिग है।उन्होंने आरोप लगाया कि पासपोर्ट बनवाने के दौरान उसके दस्तावेजों में उम्र बढ़ाकर दिखाई गई, ताकि शादी को कानूनी रूप से सही साबित किया जा सके।लेकिन मोनालिसा ने इन आरोपों को पहले ही खारिज कर दिया है।केरल में मीडिया से बातचीत करते हुए उसने कहा था कि वह 18 साल की है और नाबालिग होने की खबरें पूरी तरह गलत हैं।

### राजनीति की भी एंट्री

इस मामले में स्थानीय राजनीति भी सक्रिय हो गई है।स्थानीय भाजपा नेता विक्रम पटेल ने दावा किया है कि मोनालिसा केरल में किसी साजिश का शिकार हो सकती हैं।उन्होंने कहा कि इस मामले को मुख्यमंत्री के सामने रखने से पहले कानूनी विशेषज्ञों से सलाह ली जा रही है।दूसरी ओर, कई लोग यह भी कह रहे हैं कि यह दो वयस्क लोगों का निजी फैसला हो सकता है और इसे विवाद का रूप नहीं दिया जाना चाहिए।

### एक साधारण कहानी का जटिल मोड़

कुछ महीने पहले तक मोनालिसा भोंसले की कहानी एक साधारण लड़की की कहानी थी, जो कुंभ मेले में माला बेचती थी और अचानक सोशल मीडिया की दुनिया में पहचान पा गई थी।लेकिन अब वही कहानी कई सवालों, आरोपों और बहसों के बीच खड़ी दिखाई दे रही है।एक तरफ परिवार की चिंता है, दूसरी तरफ राजनीतिक बयान हैं और तीसरी तरफ समाज में चल रही बहस।इस बीच मोनालिसा और फरमान की जिंदगी अब सार्वजनिक चर्चा का हिस्सा बन चुकी है।

फिलहाल इस मामले में कई सवाल अभी भी खुले हुए हैं।क्या यह सिर्फ दो युवाओं का व्यक्तिगत फैसला है या इसके पीछे कोई और कहानी छिपी है।क्या उम्र को लेकर उठे सवाल सही हैं या गलत।और क्या यह मामला आगे कानूनी या राजनीतिक रूप लेगा।इन सभी सवालों के जवाब आने वाले दिनों में सामने आ सकते हैं।लेकिन फिलहाल इतना जरूर है कि कुंभ मेले की भीड़ से चर्चा में आई एक लड़की की जिंदगी अब देश भर में चर्चा का विषय बन गई है।

# गैस सिलेंडर

## पर अचानक बढ़ी मारामारी आखिर हो क्या रहा है?

**हॉर्मुज तनाव से आयात प्रभावित, देश में स्टॉक सिर्फ 10 दिन का बताया जा रहा। सरकार ने उत्पादन बढ़ाया, लेकिन शहरों में ब्लैक मार्केटिंग और घबराहट से बढ़ी मांग**

देश में रसोई गैस यानी एलपीजी की मांग बढ़ गई है। पहले रोजाना औसतन 50 से 55 लाख सिलेंडर बुक होते थे, लेकिन अब यह संख्या 75 लाख तक पहुंच गई है और कुछ दिनों में तो 88 लाख तक चली गई। लोग घबराहट में ज्यादा बुकिंग कर रहे हैं। तेल मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने कहा कि डिलीवरी अभी भी 50 लाख सिलेंडर रोजाना हो रही है। घरेलू उपभोक्ताओं को प्राथमिकता दी जा रही है। डिलीवरी का समय 2.5 दिन ही है, लेकिन कुछ शहरों में 7 दिन तक लग रहा है। कारण है पश्चिम एशिया में अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच तनाव, जो हॉर्मुज जलडमरूमध्य से आने वाले आयात को प्रभावित कर रहा है। भारत अपनी 60 प्रतिशत एलपीजी विदेश से लाता है। अब घरेलू उत्पादन 30 प्रतिशत बढ़ाया गया है, लेकिन फिर भी मांग पूरी नहीं हो पा रही। कई राज्यों में लोग ऑनलाइन बुकिंग करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन डिस्ट्रीब्यूटर स्तर पर दबाव है। सरकार कह रही है कि घबराहट न करें, लेकिन लोग सोशल मीडिया पर अफवाहें सुनकर सिलेंडर जमा कर रहे हैं। अस्पताल और स्कूलों को बिना रुकावट सप्लाई दी जा रही है। कुल मिलाकर स्थिति नियंत्रण में है, लेकिन आम घरेलू महिलाएं चिंतित हैं कि कब तक सिलेंडर मिलेगा। इस बीच कई जगहों पर पाइप्ड गैस यानी पीएनजी की ओर जाने की सलाह दी जा रही है जहां उपलब्ध हो।

> देश के लोगों को घबराने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। सरकार की पहली प्राथमिकता यह है कि किसी भी घर की रसोई बंद न हो। हमने उत्पादन बढ़ाने, नए देशों से आयात करने और ब्लैक मार्केटिंग रोकने के लिए सख्त कदम उठाए हैं। जो लोग अफवाह फैलाकर घबराहट पैदा कर रहे हैं, वे देश के हित के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। मैं देशवासियों से अपील करता हूं कि जरूरत के अनुसार ही गैस बुक करें और भरोसा रखें कि सरकार हर परिवार तक गैस पहुंचाने के लिए पूरी ताकत से काम कर रही है।
>
> **नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)**

> एलपीजी सप्लाई को लेकर सरकार पूरी तरह सतर्क है। हमने रिफाइनरियों को अधिक उत्पादन का निर्देश दिया है और वैकल्पिक देशों से आयात की व्यवस्था भी तेज कर दी है। घरेलू उपभोक्ताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है और डिलीवरी चक्र सामान्य बनाए रखने की कोशिश की जा रही है। जहां कहीं भी ब्लैक मार्केटिंग की शिकायत मिल रही है, वहां सख्त कार्रवाई की जा रही है। हमारा लक्ष्य साफ है कि किसी भी परिवार को गैस की कमी का सामना न करना पड़े।
>
> **हरदीप सिंह पुरी (पेट्रोलियम मंत्री)**

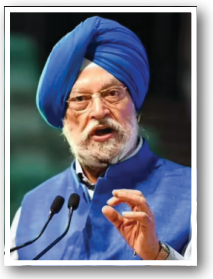

> देश में रसोई गैस को लेकर जो स्थिति बन रही है, वह सरकार की तैयारी पर सवाल खड़े करती है। अगर अंतरराष्ट्रीय हालात पहले से तनावपूर्ण थे तो ऊर्जा सुरक्षा को लेकर ठोस योजना क्यों नहीं बनाई गई। आम परिवारों के लिए गैस सिलेंडर सिर्फ एक सुविधा नहीं, बल्कि रोजमर्रा की जरूरत है। सरकार को तुरंत सप्लाई मजबूत करने और ब्लैक मार्केटिंग पर सख्त कार्रवाई करने की जरूरत है।
>
> **राहुल गांधी (कांग्रेस)**

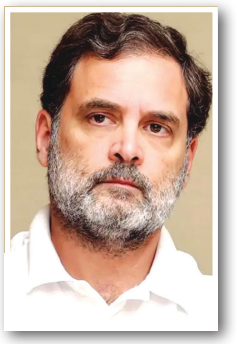

### सरकार का इंतजाम कितना?

सरकार ने कई कदम उठाए हैं ताकि रसोई गैस की सप्लाई बनी रहे। 8 मार्च 2026 को एलपीजी कंट्रोल ऑर्डर जारी किया गया। सभी रिफाइनरी को ज्यादा से ज्यादा एलपीजी बनाने का निर्देश दिया गया। इससे घरेलू उत्पादन पिछले 5 दिनों में 28 प्रतिशत बढ़ गया है। सारा उत्पादन तीन तेल कंपनियों को घरेलू उपयोग के लिए दिया जा रहा है। बुकिंग के बीच का गैप बढ़ा दिया गया है – शहरों में 25 दिन और गांवों में 45 दिन। इससे होर्डिंग रुकेगी। डिलीवरी कन्फर्मेशन कोड को 50 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक बढ़ाया गया है, ताकि सिलेंडर गलत जगह न जाए। आयात के लिए नए देश जोड़े गए हैं – अमेरिका, नॉर्वे, कनाडा, अल्जीरिया और रूस से cargoes लाए जा रहे हैं। पहले 60 प्रतिशत गल्फ देशों से आता था, अब विविधता बढ़ाई गई। वाणिज्यिक एलपीजी को 20 प्रतिशत तक सीमित कर दिया गया है ताकि होटल और रेस्टोरेंट में ब्लैक न हो। अतिरिक्त केरोसिन भी राज्यों को दिया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि जो लोग घबराहट फैला रहे हैं वे देश को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

### आयात रुक जाए तो कितने दिन चलेगी गैस?

अगर आयात पूरी तरह रुक जाए तो भारत कितने दिन एलपीजी चला सकता है? वर्तमान स्टॉक सिर्फ 10 दिन की खपत के बराबर है। पहले मार्च की शुरुआत में 25-30 दिन का स्टॉक बताया गया था, लेकिन हॉर्मुज में तनाव बढ़ने से आयात कम हुआ और स्टॉक घटकर 10 दिन रह गया। भारत सालाना 31 मिलियन टन एलपीजी इस्तेमाल करता है, जिसमें 60 प्रतिशत आयात होता है। घरेलू उत्पादन अब 30 प्रतिशत बढ़ा है, लेकिन फिर भी पूरा नहीं होता। देश में सिर्फ दो अंडरग्राउंड स्टोरेज हैं, कुल 1.4 लाख टन क्षमता, जो महज 2 दिन की खपत है। लंबी अवधि का कोई बड़ा रिजर्व नहीं है। सरकार कह रही है कि घरेलू उपयोग को प्राथमिकता दी जा रही है और वैकल्पिक स्रोतों से आयात जारी है। अगर स्थिति लंबी चली तो होटल और कमर्शियल क्षेत्र प्रभावित होंगे, लेकिन घरों के लिए 10 से 15 दिन तक सप्लाई चल सकती है क्योंकि उत्पादन जारी है।

### ब्लैक मार्केटिंग की समस्या

एलपीजी की सबसे ज्यादा ब्लैक मार्केटिंग शहरों में हो रही है, खासकर दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और लखनऊ जैसे बड़े शहरों में। सामान्य 14.2 किलो का सिलेंडर 900-1000 रुपये का होना चाहिए, लेकिन ब्लैक में 2000 से 2800 रुपये तक बिक रहा है। डिस्ट्रीब्यूटर और मध्यस्थ लोग होर्डिंग कर रहे हैं। कई जगहों पर रेड पड़ी हैं – छत्तीसगढ़ में 741 सिलेंडर जब्त, महाराष्ट्र में 29, लखनऊ में 1483 जगहों पर जांच। कर्नाटक में पुलिस को सख्त आदेश दिए गए हैं। सबसे ज्यादा गैस घरेलू से डायवर्ट होकर होटल, रेस्टोरेंट और छोटे व्यापारियों को जा रही है। सरकार ने कमर्शियल एलपीजी को 20 प्रतिशत तक सीमित किया है ताकि यह न हो। लेकिन फिर भी मध्यस्थ लोग घरेलू सिलेंडर महंगे दाम पर बेच रहे हैं। सर्वे में 57 प्रतिशत घरों ने कहा कि डिलीवरी में देरी या ब्लैक का सामना करना पड़ा। गांवों में कम समस्या है क्योंकि बुकिंग गैप 45 दिन है। दिल्ली में कुछ लोग पेट्रोल जलाकर भी सिलेंडर खरीद रहे हैं। यह दिखाता है कि सप्लाई में कमी नहीं बल्कि घबराहट और गलत तरीके से बेचना समस्या है।

### रक्षा मंत्री का आश्वासन या विपक्ष - कौन सच्चा?

पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने संसद में कहा कि घरेलू एलपीजी सप्लाई पूरी तरह सुरक्षित है। उत्पादन 28 प्रतिशत बढ़ा है और आयात नए देशों से हो रहा है। उन्होंने अफवाहों पर घबराहट न करने की अपील की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि जो लोग घबराहट फैला रहे हैं वे देश को नुकसान पहुंचा रहे हैं और खुद को लोगों के सामने उजागर कर रहे हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

# अभी कुछ समय है!

जानता हूँ

जीवन का कुआँ
बूँद-बूँद भरता जाएगा

और एक दिन
गागर से छलक जाएगा

सागर।
अभी कुछ समय है!

तब तक
भीतर बर्फ़ की तरह जम चुके
अवसाद को पिघला कर
बनाऊँगा प्रेम-तितलियाँ

और मुक्त छोड़ दूँगा
अपने जीवन के आसमान पर।

अभी कुछ समय है!
जितना भी है!

उसे उम्मीद-गाँव में
बिताता हुआ
जीवन के छत्ते से
एक बूँद भी नहीं गिरने दूँगा

निरर्थक!
जानता हूँ!

गागर से छलक जाएगा
सागर!

किंतु
अभी कुछ समय है!

# कैसे लिखूँ?

नदियाँ बहती हैं
रुधिर की

जब भी देखता हूँ स्वप्न!
युद्ध में मारे गए बच्चों की

लाश-सी गंध आती है,
जब भी चुनता हूँ पुष्प!

अकाल-ग्रस्त लोगों की भूख
कँपाती है रोम-रोम,

जब भी करता हूँ भोजन!
बेज़ुबान औरतों की चुप्पी

गूँजती है हृदय में,
जब भी सुनता हूँ संगीत!

मैं देखता हूँ
चुनता हूँ

सुनता हूँ
मैं पाता हूँ

सब तरफ़ छिपती फिरती
जिजीविषा को।

मैं साँस लेता हूँ
अनुभव करता हूँ

लिखता हूँ
मैं कैसे लिखूँ प्रेम

जबकि मँडराते हैं गिद्ध—
मनुष्यता के मुर्दे पर।

# लोहे की जिजीविषा

एक दिया जल रहा था
पतिंगा उसकी लौ में कूद गया

और फिर
रात का अंधकार

मेरी दो पीली आँखों की रौशनी से
अनवरत लड़ता रहा

न हवा की ध्वनि
न कुत्तों की कुकराहट

न पदचाप सड़कों पर
केवल

आती-जाती साँस
विद्रोह करती रही नीरवता से

मन-भीतर एक जंगल उग आया
जिसमें कूद नहीं रहा कोई हिरण

बोल नहीं रही कोई कोयल
रह नहीं रहा कोई जंतु-जन

है तो केवल लंबे-लंबे
लोहे के पेड़

जिनकी लौह-डाल पर
उगी हुई है

लोहे की जिजीविषा
दिया जल रहा होता तो भी क्या...

**ऋत्विक**
**नई पीढ़ी के कवि-लेखक।**

एक बेटे की अंतिम इच्छा

# एम्स के कमरे में चल रही जिंदगी और मौत के बीच खामोश जंग

**राजनगर एक्सटेंशन की एक सोसायटी से शुरू हुई कहानी अब पूरे देश में चर्चा का विषय बन गई है। हरीश राणा की निष्क्रिय इच्छामृत्यु की प्रक्रिया ने लोगों को जीवन, पीड़ा और सम्मानजनक विदाई पर सोचने के लिए मजबूर कर दिया है।**

@ रिंकू विश्वकर्मा

शनिवार को हरीश को दिल्ली के एम्स अस्पताल ले जाया गया था। कई लोगों को इसकी जानकारी उसी समय नहीं मिल सकी। रविवार को छुट्टी होने के कारण जब लोगों को पूरी बात पता चली तो सोसायटी में चर्चा का माहौल बन गया।सुबह बारिश के कारण लोग ज्यादा बाहर नहीं निकल पाए, लेकिन शाम होते ही पार्क में लोग इकट्ठा होने लगे। छोटे-छोटे समूहों में बैठकर सभी एक ही विषय पर बात कर रहे थे। किसी के चेहरे पर चिंता थी, तो किसी की आवाज में गहरी संवेदना।सोसायटी के निवासी ब्रजराज सिंह बताते हैं कि कई लोगों ने हरीश के परिवार से संपर्क करने की कोशिश की। कुछ लोगों ने पिता और बेटे दोनों को फोन किया, लेकिन किसी ने फोन नहीं उठाया।

ब्रजराज कहते हैं कि "हम सब समझते हैं कि इस समय परिवार किस मानसिक स्थिति से गुजर रहा होगा। इसलिए बहुत ज्यादा फोन करके उन्हें परेशान करना भी ठीक नहीं है। पहले भी परिवार ने कई बार कहा है कि उन्हें थोड़ी निजता और शांति चाहिए।" सोसायटी के लोगों ने मिलकर एक फैसला भी लिया। वरिष्ठ निवासी केशव कुमार को यह जिम्मेदारी दी गई कि वह परिवार के संपर्क में रहें। अगर किसी तरह की जरूरत पड़े तो तुरंत मदद पहुंचाई जा सके।सोसायटी के ही एक अन्य निवासी अनिल राज कहते हैं कि इस समय सबसे जरूरी है

> गाजियाबाद के राजनगर एक्सटेंशन की राज एम्पायर सोसायटी में रविवार का दिन सामान्य नहीं था। सुबह हल्की बारिश हो रही थी। आमतौर पर छुट्टी के दिन यहां बच्चे पार्क में खेलते दिखाई देते हैं, बुजुर्ग टहलते हैं और लोग आपस में बैठकर बातचीत करते हैं। लेकिन इस बार माहौल कुछ अलग था।हर घर, हर बालकनी और हर बातचीत में एक ही नाम था
>
> **हरीश राणा**

संवेदनशीलता।उनके शब्दों में, "हर किसी का बार-बार फोन करना ठीक नहीं है। परिवार पहले ही बहुत कठिन समय से गुजर रहा है। हमें उनकी स्थिति समझनी चाहिए।"इसी बीच लोगों के बीच तरह-तरह की खबरें भी फैलने लगीं। कुछ लोगों ने यह भी कहा कि हरीश को लाइफ सपोर्ट सिस्टम से हटाया जा चुका है। हालांकि इस बात की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी।उधर दिल्ली के एम्स अस्पताल में एक बेहद संवेदनशील और दुर्लभ चिकित्सा प्रक्रिया चल रही है।

एम्स के डॉ. बीआर आंबेडकर इंस्टीट्यूट रोटरी कैंसर अस्पताल के पैलिएटिव केयर यूनिट में शनिवार को हरीश राणा को भर्ती किया गया था। यहीं से उनकी निष्क्रिय इच्छामृत्यु की प्रक्रिया शुरू हुई।अस्पताल के विशेषज्ञ

डॉक्टरों की एक टीम लगातार उनकी स्थिति पर नजर रख रही है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार यह पूरी प्रक्रिया बेहद सावधानी और संवेदनशीलता के साथ की जा रही है।

एम्स प्रशासन इस मामले में आधिकारिक बयान देने से बच रहा है। उनका कहना है कि वे केवल सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का पालन कर रहे हैं।अस्पताल के सूत्रों के अनुसार, प्रक्रिया के पहले चरण में हरीश के शरीर से लाइफ सपोर्ट से जुड़े कुछ उपकरण हटाए गए हैं।इनमें सांस लेने के लिए लगी ट्रैकियोस्टॉमी ट्यूब और पोषण देने वाली पीईजी फीडिंग ट्यूब शामिल हैं।

डॉक्टरों का कहना है कि यह प्रक्रिया धीरे-धीरे और बेहद सावधानी से की जा रही है, ताकि हरीश को किसी तरह की तकलीफ न हो।चिकित्सकों की कोशिश है कि उन्हें दर्द से राहत मिले और वे सम्मानजनक तरीके से अपनी अंतिम यात्रा पूरी कर सकें।अस्पताल के सूत्रों के मुताबिक डॉक्टर लगातार उनकी हालत पर नजर रखे हुए हैं। हालांकि उनकी स्थिति को देखते हुए यह आशंका जताई जा रही है कि एक-दो दिन के भीतर वह इस पीड़ा से मुक्त हो सकते हैं।शनिवार का वह पल परिवार के लिए बेहद भावुक था, जब हरीश को गाजियाबाद से एंबुलेंस के जरिए एम्स लाया गया।उस समय उनके पिता अशोक राणा और मां निर्मला देवी भी साथ थे।

किसी भी माता-पिता के लिए यह क्षण कितना कठिन होगा, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। अस्पताल के एक कमरे में बैठकर वे अपने बेटे के साथ हर पल बिता रहे हैं।कभी उसके चेहरे को देखते हैं, कभी चुपचाप उसकी हथेली थाम लेते हैं।यह सिर्फ एक परिवार की कहानी नहीं है। यह उस दर्द की कहानी है, जिसे शब्दों में पूरी तरह बयान करना मुश्किल है। जिन लोगों ने कभी हरीश को हंसते-बोलते देखा था, आज वही लोग उसके लिए दुआ कर रहे हैं। किसी को उम्मीद है कि शायद कोई चमत्कार हो जाए। कोई यह सोचकर चुप हो जाता है कि शायद अब यही उसके लिए सबसे शांत रास्ता है। यह घटना लोगों को एक बड़े सवाल के सामने खड़ा कर रही है।क्या कभी ऐसा भी समय आता है जब जीवन से ज्यादा जरूरी सम्मानजनक विदाई हो जाती है? हरीश राणा की कहानी ने इस सवाल को फिर से जीवित कर दिया है।

# जब सड़क पर अचानक सामने आ गया रोबोट

## मकाऊ में बुजुर्ग महिला घबरा गई, लोगों ने कहा- तकनीक का नया दौर

@ रिंकू विश्वकर्मा

मकाऊ की एक शांत सड़क पर पिछले गुरुवार को घटी एक छोटी-सी घटना ने लोगों को हैरान भी किया और मुस्कराने का मौका भी दे दिया।यह घटना शहर के पटाने इलाके के पास स्थित लोक युंग फा युएन नाम के एक आवासीय परिसर के बाहर हुई। दोपहर का समय था और आसपास का माहौल बिल्कुल सामान्य था। लोग अपने काम में लगे हुए थे, कुछ लोग सड़क से गुजर रहे थे और कुछ अपने फोन पर बात करते हुए धीरे-धीरे टहल रहे थे।उसी समय एक बुजुर्ग महिला भी सड़क पर आराम से चल रही थीं। वह अपने मोबाइल फोन पर किसी से बातचीत कर रही थीं और शायद उन्हें इस बात का बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि अगले कुछ सेकंड में उनके साथ एक अजीब अनुभव होने वाला है।

बताया जाता है कि तभी एक ह्यूमनॉइड रोबोट उनके पीछे आ गया।यह रोबोट इंसानों की तरह दिखने वाला और चलने-फिरने वाला मशीन था, जिसे संभवतः किसी तकनीकी प्रदर्शन या परीक्षण के लिए उस इलाके में लाया गया था। लेकिन महिला को इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी।महिला अभी भी फोन पर बात कर रही थीं। कुछ कदम आगे बढ़ने के बाद उन्हें ऐसा लगा कि उनके पीछे कोई आ रहा है। जब उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो सामने का दृश्य देखकर वह एक पल के लिए घबरा गईं। उनके पीछे कोई इंसान नहीं बल्कि एक रोबोट चल रहा था।अचानक किसी मशीन को अपने पीछे चलते देख वह चौंक गईं।

पहले तो वह डर गईं, फिर गुस्से में रोबोट की ओर मुड़कर उसे रोकने की कोशिश करने लगीं। आसपास मौजूद लोगों के लिए यह दृश्य थोड़ा हैरान करने वाला था। कुछ लोग ठिठककर यह सब देखने लगे।इसी बीच किसी ने पुलिस को सूचना दे दी।कुछ ही मिनटों में दो पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंच गए।इस पूरे घटनाक्रम का एक वीडियो भी सामने आया है, जो बाद में सोशल मीडिया पर तेजी से फैल गया। वीडियो में देखा जा सकता है कि महिला रोबोट के सामने खड़ी होकर उससे सवाल करती हुई दिखाई देती हैं, मानो वह किसी इंसान से बात कर रही हों।

थोड़ी ही देर में पुलिस अधिकारी वहां पहुंचते हैं और स्थिति को संभाल लेते हैं।एक अधिकारी रोबोट के पास जाता है और उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे वहां से धीरे-धीरे हटाने लगता है। ऐसा लगता है जैसे किसी शरारती बच्चे को समझाकर वहां से ले जाया जा रहा हो।इस पूरी घटना में महिला को किसी तरह की शारीरिक चोट नहीं लगी। फिर भी एहतियात के तौर पर पुलिस उन्हें अस्पताल ले गई, ताकि डॉक्टर उनकी जांच कर सकें।डॉक्टरों ने जांच के बाद बताया कि महिला बिल्कुल ठीक हैं और उन्हें किसी तरह की चोट या गंभीर परेशानी नहीं हुई है। कुछ समय बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।बाद में महिला ने भी इस मामले को आगे बढ़ाने से इनकार कर दिया।उनका कहना था कि वह अचानक घबरा गई थीं, लेकिन अब सब ठीक है।इस घटना के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर लोगों की अलग-अलग प्रतिक्रियाएं देखने को मिलीं।किसी ने इसे तकनीक के नए दौर का मजेदार उदाहरण बताया, तो किसी ने कहा कि आने वाले समय में ऐसे रोबोट आम दृश्य बन सकते हैं और लोगों को इनके साथ रहने की आदत डालनी होगी।दरअसल दुनिया के कई हिस्सों में अब इंसानों जैसे दिखने वाले रोबोट पर तेजी से काम हो रहा है। इन्हें होटल, अस्पताल, फैक्ट्री और सार्वजनिक स्थानों पर इस्तेमाल करने की योजना भी बनाई जा रही है।लेकिन मकाऊ की इस घटना ने यह भी दिखा दिया कि तकनीक कितनी भी आगे क्यों न बढ़ जाए, आम लोगों के लिए यह बदलाव अचानक और अजीब लग सकता है।उस दिन सड़क पर चल रही उस बुजुर्ग महिला के लिए यह बस एक सामान्य दिन था। वह शायद किसी परिचित से फोन पर बात करते हुए घर की ओर जा रही थीं।लेकिन कुछ ही सेकंड में उनके सामने एक ऐसा अनुभव आ गया, जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

# 98वें ऑस्कर में चमकी वन बैटल आफ्टर अनदर की जीत

**लॉस एंजिल्स के डॉल्बी थिएटर में सजी 98वीं ऑस्कर अवॉर्ड सेरेमनी में 'वन बैटल आफ्टर अनदर' ने 6 पुरस्कार जीतकर सबसे बड़ी जीत दर्ज की, जबकि माइकल बी. जॉर्डन और जेसी बकले ने अभिनय की बड़ी कैटेगरी में बाजी मारी।**

**छह ऑस्कर, हजारों तालियां और एक फिल्म जिसने पूरी दुनिया का दिल जीत लिया।**

**डॉल्बी थिएटर में गूंजी तालियां, सितारों से सजी रात में सिनेमा का जादू फिर हुआ अमर।**

**सपनों, संघर्ष और कहानियों की जीत-यही है ऑस्कर की असली चमक।**

**जहां हर ट्रॉफी के पीछे छुपी होती है एक लंबी कहानी और अनगिनत मेहनत।**

**सिनेमा का वह मंच जहां एक जीत पूरी दुनिया की सुर्खियां बन जाती है।**

@ सौम्या

लॉस एंजिल्स की रात उस दिन कुछ अलग थी। शहर के मशहूर डॉल्बी थिएटर के बाहर लाल कालीन बिछ चुका था। कैमरों की चमक, प्रशंसकों की भीड़ और सितारों की मुस्कान के बीच सिनेमा की दुनिया का सबसे बड़ा उत्सव शुरू होने वाला था। यह था 98वां अकादमी अवॉर्ड समारोह, जिसे दुनिया आम तौर पर ऑस्कर के नाम से जानती है।हर साल की तरह इस बार भी दुनिया भर के फिल्म प्रेमियों की नजरें इसी मंच पर टिकी थीं। कौन जीतेगा? कौन चूकेगा? किस फिल्म की कहानी दुनिया के दिल में सबसे गहराई तक उतर पाई? इन सवालों के जवाब धीरे-धीरे सामने आते गए।इस बार की सबसे बड़ी खबर यह रही कि One Battle After Another ने 'बेस्ट फिल्म' का खिताब अपने नाम कर लिया। यह फिल्म न केवल इस साल की सबसे चर्चित फिल्मों में रही, बल्कि इसने कुल छह ऑस्कर अवॉर्ड जीतकर समारोह की सबसे बड़ी विजेता बनकर उभरी।

## जीत की कहानी

वन बैटल आफ्टर अनदर की जीत को कई लोग सिनेमा की उस परंपरा का सम्मान मान रहे हैं जिसमें कहानी, अभिनय और निर्देशन तीनों का संतुलन दिखाई देता है। फिल्म में युद्ध, संघर्ष और इंसानी जज्बे की कहानी को बड़े संवेदनशील तरीके से दिखाया गया है।फिल्म से जुड़े कलाकारों और तकनीकी टीम ने मंच पर पहुंचकर जब ट्रॉफी उठाई तो पूरे थिएटर में तालियों की गूंज सुनाई दी। सिनेमा के जानकार मानते हैं कि यह जीत केवल एक फिल्म की नहीं, बल्कि उस विचार की भी है जिसमें कहानी के जरिए इंसानी भावनाओं को गहराई से दिखाया जाता है।इस फिल्म से जुड़े कई बड़े नामों में हॉलीवुड स्टार Leonardo DiCaprio का भी जिक्र होता रहा। हालांकि इस साल अभिनय की कैटेगरी में उन्हें पुरस्कार नहीं मिला, लेकिन उनका नाम पूरे समारोह के दौरान चर्चा में बना रहा।

## बेस्ट एक्टर का सम्मान

इस साल बेस्ट एक्टर का पुरस्कार माइकल बी. जॉर्डन को उनकी फिल्म Sinners के लिए मिला। इस फिल्म में उनके अभिनय को समीक्षकों और दर्शकों दोनों ने खूब सराहा।माइकल बी. जॉर्डन ने अपने किरदार को जिस गहराई से निभाया, उसने दर्शकों को कहानी के भीतर खींच लिया। जब उनका नाम विजेता के तौर पर घोषित हुआ तो पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा।पुरस्कार स्वीकार करते समय उन्होंने अपनी टीम और परिवार का धन्यवाद करते हुए कहा कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह लोगों की भावनाओं और संघर्षों को दुनिया के सामने रखने का एक जरिया भी है।

## बेस्ट एक्ट्रेस की भावुक जीत

महिला अभिनय की श्रेणी में बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड Jessie Buckley को फिल्म Hamnet के लिए मिला। यह फिल्म मशहूर नाटककार William Shakespeare के जीवन के एक बेहद संवेदनशील पहलू को दिखाती है। कहानी उनकी पत्नी एग्नेस और उनके बेटे हेमनेट के इर्द-गिर्द घूमती है।फिल्म में जेसी बकले ने एग्नेस का किरदार निभाया है, जो अपने 11 साल के बेटे की मौत के बाद गहरे दुख से गुजरती है और उस दर्द से उबरने की कोशिश करती है।

यह किरदार इतना भावुक और वास्तविक लगा कि दर्शकों के साथ-साथ समीक्षक भी इससे प्रभावित हुए। मंच पर अवॉर्ड लेते समय जेसी बकले की आंखों में आंसू भी दिखाई दिए।

## रिकॉर्ड नॉमिनेशन और उम्मीदें

इस साल की एक और बड़ी चर्चा रही फिल्म Sinners के नॉमिनेशन। इस फिल्म को कुल 16 श्रेणियों में नामांकन मिला, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है।इससे पहले इतने बड़े पैमाने पर नॉमिनेशन पाने वाली फिल्मों में Ben-Hur, Titanic और The Lord of the Rings: The Return of the King जैसी फिल्में शामिल रही हैं, जिन्हें 11-11 नॉमिनेशन मिले थे।हालांकि 'सिनर्स' से उम्मीद थी कि यह कई श्रेणियों में जीत हासिल करेगी, लेकिन अंततः फिल्म चार अवॉर्ड जीतकर ही संतोष करना पड़ा।

## अन्य फिल्मों का प्रदर्शन

इस साल कई फिल्मों ने अलग-अलग श्रेणियों में अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। Frankenstein ने चार अवॉर्ड जीते, जबकि Sentimental Value को एक अवॉर्ड मिला।दूसरी ओर Timothe Chalamet की फिल्म Marty Supreme को नौ नॉमिनेशन मिलने के बावजूद कोई पुरस्कार नहीं मिल सका।यह सिनेमा की दुनिया का वह सच है जहां कभी-कभी सबसे ज्यादा उम्मीदें भी पुरस्कार में नहीं बदल पातीं।

## भारतीय सिनेमा के लिए ऑस्कर

इस साल भारतीय सिनेमा के लिए ऑस्कर में कुछ निराशा भी रही। किसी भी भारतीय फिल्म को इस बार नॉमिनेशन नहीं मिला।हालांकि भारतीय मूल की फिल्ममेकर Geeta Gandbhir की दो डॉक्यूमेंट्री फिल्मों को नामांकन जरूर मिला था, लेकिन वे पुरस्कार जीतने में सफल नहीं हो सकीं।फिर भी भारतीय दर्शकों के लिए एक गर्व का पल तब आया जब Priyanka Chopra एक बार फिर ऑस्कर समारोह में प्रेजेंटर के रूप में नजर आईं।

## क्या ऑस्कर विजेताओं को पैसा मिलता है

प्रियंका चोपड़ा जब रेड कार्पेट पर पहुंचीं तो कैमरों की फ्लैश लगातार चमकने लगीं। उनके साथ उनके पति Nick Jonas भी मौजूद थे।यह दूसरी बार था जब प्रियंका ऑस्कर में प्रेजेंटर बनीं। 2016 के बाद फिर से इस मंच पर उनका लौटना भारतीय प्रशंसकों के लिए खास पल था।ऑस्कर को सिनेमा जगत का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार माना जाता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि इस पुरस्कार के साथ कोई नकद राशि नहीं दी जाती।विजेताओं को एक सुनहरी ट्रॉफी दी जाती है, जिसे ऑस्कर स्टैच्यू कहा जाता है। इसे फिल्म इंडस्ट्री में सम्मान का सबसे बड़ा प्रतीक माना जाता है।आश्चर्य की बात यह है कि आधिकारिक तौर पर एकेडमी इस ट्रॉफी की कीमत सिर्फ एक डॉलर मानती है।हालांकि इस ट्रॉफी को बनाने में लगभग 400 डॉलर का खर्च आता है, जो भारतीय मुद्रा में करीब 36 हजार रुपये से ज्यादा होता है।एकेडमी के नियमों के अनुसार, कोई भी विजेता अपनी ऑस्कर ट्रॉफी को खुले बाजार में बेच नहीं सकता। अगर कोई इसे बेचना चाहता है तो उसे पहले एकेडमी को एक डॉलर में वापस बेचने की पेशकश करनी होती है।

## असली फायदा क्या होता है

भले ही ऑस्कर के साथ नकद पुरस्कार नहीं मिलता, लेकिन इसे जीतने के बाद कलाकारों के करियर में बड़ा बदलाव आ जाता है।फिल्म इंडस्ट्री में इसे अक्सर ऑस्कर इफेक्ट कहा जाता है।कई रिपोर्ट्स बताती हैं कि ऑस्कर जीतने के बाद कलाकारों की फीस में औसतन 20 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो सकती है।

# चीन-ईरान की बढ़ती दोस्ती

## क्या अमेरिका को घेरने की नई चाल, या भारत के लिए बढ़ती चिंता?

**25 साल के समझौते, सस्ते तेल और बड़े निवेश के बीच बीजिंग-तेहरान की नजदीकी बढ़ी। मध्य पूर्व में बदलते समीकरणों पर भारत की नजर**

चीन और ईरान के बीच दोस्ती कई सालों से बढ़ रही है और 2021 में दोनों देशों ने 25 साल का बड़ा समझौता किया था जिसमें चीन ईरान में 400 अरब डॉलर तक निवेश करने वाला था। अब 2026 में भी यह समझौता चल रहा है और दोनों नेता इसे तेज करने की बात कर रहे हैं। मुख्य रूप से चीन ईरान का तेल बहुत सस्ते दाम पर खरीदता है। 2025 में चीन ने ईरान के 80 प्रतिशत तेल का आयात किया जो चीन के समुद्री तेल आयात का 13.5 प्रतिशत था। इससे ईरान की अर्थव्यवस्था पर अमेरिका के प्रतिबंधों का असर कम होता है और ईरान को मदद मिलती है। लेकिन चीन सिर्फ तेल नहीं खरीदता बल्कि ईरान में सड़कें रेलवे और बंदरगाह जैसे प्रोजेक्ट में भी रुचि दिखाता है। ईरान के नए नेता के साथ भी चीन ने बात की है और दोनों ने कहा है कि यह दोस्ती लंबे समय के लिए है। चीन का कहना है कि इससे दोनों देशों को फायदा होगा और क्षेत्र में शांति आएगी। वहीं अमेरिका इसे अपना विरोध मानता है क्योंकि वह ईरान पर दबाव डालना चाहता है। लेकिन चीन स्पष्ट रूप से कहता है कि वह ईरान को हथियार नहीं दे रहा है और सिर्फ व्यापार पर जोर दे रहा है। इस दोस्ती से ईरान को आर्थिक ताकत मिलती है लेकिन चीन का फोकस अपनी जरूरतों पर है जैसे सस्ता तेल और बेल्ट एंड रोड प्रोजेक्ट। विशेषज्ञ कहते हैं कि यह गठबंधन अमेरिका के खिलाफ है लेकिन चीन सीधे लड़ाई में नहीं पड़ना चाहता। भारत के लिए यह देखना जरूरी है कि दोनों देश कितना आगे बढ़ते हैं क्योंकि इससे क्षेत्रीय संतुलन बदल सकता है। कुल मिलाकर यह दोस्ती आर्थिक है लेकिन इसमें रणनीतिक पहलू भी जुड़े हुए हैं जो दुनिया को सोचने पर मजबूर करते हैं।

### तेल से आगे की साझेदारी

चीन ईरान का सबसे बड़ा तेल खरीदार बना, बुनियादी ढांचे में अरबों डॉलर निवेश की योजना।

### भारत की रणनीतिक चिंता

चाबहार बंदरगाह पर भारत का दांव, लेकिन पास ही चीन-पाकिस्तान का ग्वादर प्रोजेक्ट।

### अमेरिका के लिए नई चुनौती

प्रतिबंधों के बीच ईरान को आर्थिक सहारा, वाशिंगटन इसे अपनी रणनीति के खिलाफ मानता है।

### हॉर्मुज में बढ़ता तनाव

तेल के सबसे बड़े समुद्री रास्ते पर खतरा, जिससे वैश्विक ऊर्जा बाजार और एशियाई देशों की चिंता बढ़ी।

### अमेरिका को घेरने की चीन की रणनीति

चीन ईरान को मजबूत करके अमेरिका को घेरने की कोशिश कर रहा है या नहीं यह सवाल आजकल बहुत चर्चा में है। चीन का मुख्य काम ईरान की अर्थव्यवस्था को सहारा देना है ताकि ईरान अमेरिका के प्रतिबंधों से लड़ सके। 2025 में ईरान-अमेरिका और इजराइल के बीच छोटा युद्ध हुआ जिसमें चीन ने सिर्फ शब्दों में विरोध जताया लेकिन कोई हथियार या सैनिक मदद नहीं दी। 2026 में भी जब अमेरिका ने ईरान पर हमले किए तो चीन ने ceasefire की अपील की और कहा कि यह युद्ध कभी नहीं होना चाहिए था। चीन का विदेश मंत्री वांग यी ने मार्च 2026 में कहा कि 2026 अमेरिका-चीन संबंधों का अच्छा साल हो सकता है अगर दोनों ईमानदारी से काम करें। इसका मतलब है कि चीन ईरान के लिए अमेरिका से सीधा टकराव नहीं चाहता। लेकिन चीन ईरान को कुछ तकनीकी मदद जैसे मिसाइल या साइबर सुरक्षा दे सकता है जो रिपोर्ट्स में आ रही है पर यह पुष्टि नहीं हुई है। चीन का लंबा खेल है कि ईरान कमजोर हो तो उस पर ज्यादा निर्भर बने और अमेरिका का ध्यान मध्य पूर्व में फंस जाए ताकि एशिया में चीन की स्थिति मजबूत हो। चीन का कहना है कि वह ईरान के परमाणु हथियार का विरोध करता है और शांति चाहता है। अमेरिका की नजर में चीन ईरान को इस्तेमाल करके अपनी ताकत बढ़ा रहा है लेकिन विशेषज्ञ कहते हैं कि चीन सीमा पार नहीं कर रहा क्योंकि उसकी अर्थव्यवस्था अमेरिका पर निर्भर है। इससे दुनिया में तनाव बढ़ रहा है लेकिन चीन इसे नियंत्रित रखना चाहता है। भारत जैसे देश देख रहे हैं कि अगर चीन ईरान को और मजबूत बनाता है तो क्षेत्र में संतुलन कैसे बदलेगा। कुल मिलाकर चीन की रणनीति सावधानी भरी है न कि खुली लड़ाई की।

### भारत के लिए चिंता का विषय

चीन और ईरान की बढ़ती दोस्ती भारत के लिए चिंता की वजह बन रही है क्योंकि भारत का चाबहार बंदरगाह ईरान में है और यह भारत को अफगानिस्तान व मध्य एशिया से जोड़ता है। भारत ने चाबहार में अरबों रुपये लगाए हैं ताकि पाकिस्तान के रास्ते बिना गुजरे सामान पहुंचा सके। लेकिन अगर ईरान अस्थिर होता है या चीन का प्रभाव बढ़ता है तो यह प्रोजेक्ट मुश्किल में पड़ सकता है। चीन का ग्वादर बंदरगाह पाकिस्तान में है जो चाबहार से सिर्फ 72 किलोमीटर दूर है और चीन-पाकिस्तान का प्रोजेक्ट है। अगर ईरान में चीन का निवेश बढ़ता है तो भारत का चाबहार कमजोर हो सकता है। 2026 में ईरान में युद्ध के कारण भारत को सलाह दी गई है कि वहां सुरक्षित रहें और निवेश पर असर पड़ रहा है। भारत ईरान से तेल नहीं खरीद पाता लेकिन क्षेत्र की शांति भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए जरूरी है। चीन की 25 साल की योजना से ईरान और ज्यादा चीन की तरफ झुक सकता है जिससे भारत का मध्य एशिया पहुंचना मुश्किल हो। विशेषज्ञ कहते हैं कि अगर ईरान कमजोर हुआ तो पाकिस्तान और चीन को फायदा होगा क्योंकि भारत का काउंटर बैलेंस कम हो जाएगा। भारत की नीति है कि वह सभी देशों से अच्छे संबंध रखे लेकिन चीन-ईरान गठबंधन से भारत को घेराबंदी का अहसास हो रहा है। भारत अब चाबहार को तेजी से विकसित करने की कोशिश कर रहा है लेकिन युद्ध और प्रतिबंध बाधा बन रहे हैं। इससे भारत को सोचना पड़ रहा है कि अपनी रणनीति कैसे बदलें। कुल मिलाकर यह दोस्ती भारत के लिए क्षेत्रीय संतुलन बिगाड़ रही है और भारत को सतर्क रहना होगा।

### हार्मुज जलडमरूमध्य में बढ़ता तनाव

अगर अमेरिका चीनी जहाज रोकता है तो स्थिति और बिगड़ सकती है क्योंकि ईरान ने हार्मुज जलडमरूमध्य में जहाजों पर हमले शुरू कर दिए हैं और तेल का रास्ता बंद करने की धमकी दी है। यह जलडमरूमध्य दुनिया के 20 प्रतिशत तेल का रास्ता है और चीन ईरान से तेल लेता है। 2026 में ईरान ने 18 से ज्यादा जहाजों पर हमले किए जिसमें तेल टैंकर शामिल हैं। चीन ने इन हमलों की निंदा की है और कहा है कि सभी पक्ष शांति बनाएं। अमेरिका ने ट्रंप के नेतृत्व में कहा है कि अगर ईरान जहाज रोकता है तो और हमले होंगे और सहयोगी देशों से जहाज भेजने को कहा है। चीन का तेल आयात इससे प्रभावित हो रहा है इसलिए चीन चाहता है कि रास्ता खुला रहे। अगर अमेरिका सीधे चीनी तेल टैंकर रोकता है तो चीन को नुकसान होगा और दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ सकता है। चीन ने कहा है कि वह ईरान के नए नेताओं से भी सहमत नहीं है जहाजों पर हमलों को लेकर। लेकिन चीन अभी भी अमेरिका से अच्छे संबंध रखना चाहता है और 2026 को दोनों देशों का अच्छा साल बनाने की बात कर रहा है। विशेषज्ञ कहते हैं कि यह स्थिति बढ़ सकती है लेकिन चीन युद्ध नहीं चाहता। भारत के लिए भी तेल की कीमतें बढ़ने का खतरा है। कुल मिलाकर अगर अमेरिका चीनी जहाज रोके तो तनाव तो बढ़ेगा लेकिन पूरे युद्ध तक जाने की संभावना कम है क्योंकि सभी देश सावधानी बरत रहे हैं।

### तीसरे विश्व युद्ध की चिंगारी

अगर अमेरिका ने चीनी जहाज रोका तो क्या तीसरे विश्व युद्ध की चिंगारी भड़क सकती है यह सवाल आज सबको सोचने पर मजबूर कर रहा है। लेकिन विशेषज्ञ कहते हैं कि यह खतरा कम है क्योंकि चीन अमेरिका से सीधा टकराव टाल रहा है। चीन ने ईरान युद्ध में सिर्फ बातचीत और ceasefire की अपील की है और अपना रिश्ता अमेरिका के साथ मजबूत रखना चाहता है। चीन जानता है कि युद्ध से उसकी अर्थव्यवस्था को नुकसान होगा और तेल की कीमतें बढ़ेंगी। ईरान को चीन सिर्फ आर्थिक मदद दे रहा है न कि सैन्य। अमेरिका भी चीन को सीधा चुनौती नहीं देना चाहता। दोनों देशों के नेता मार्च 2026 में मिलने वाले हैं और व्यापार पर बात करेंगे। भारत जैसे देशों को चिंता है कि अगर तनाव बढ़ा तो पूरी दुनिया प्रभावित होगी लेकिन अभी स्थिति नियंत्रण में है। चीन का फोकस अपनी ग्लोबल सिक्योरिटी पहल पर है जिसमें शांति पर जोर है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

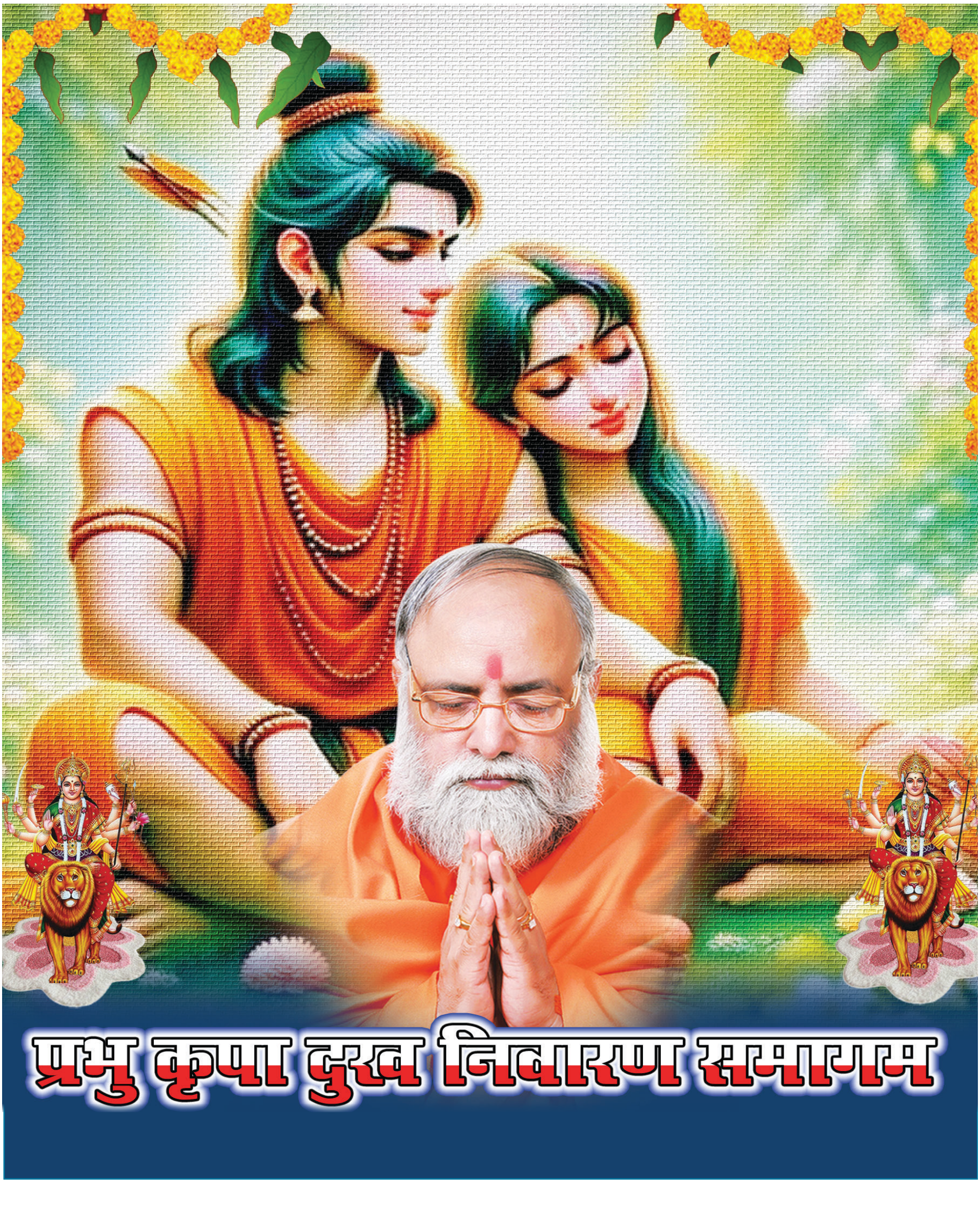

BY

# Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

## KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries